॥ श्री स्वामिनारायणो विजयते ॥

सत्संग शिक्षणश्रेणी की पाठ्यपुस्तक : 1

किशोर सत्संग प्रारंभ

लेखक

प्रो. रमेश एम. दवे

प्रकाशक

स्वामिनारायण अक्षरपीठ

शाहीबाग, अहमदाबाद - 380 004.

KISHORE SATSANG PRARAMBH (Hindi Edition)
(Childhood stories of Bhagwan Swaminarayan)

By Kishore M. Dave

A textbook for examination prescribed under the curriculum set by Bochasanwasi Shri Akshar Purushottam Swaminarayan Sanstha.

Inspirer: HDH Pramukh Swami Maharaj

Presented by:

Bochasanwasi Shri Akshar Purushottam Swaminarayan Sanstha 'Swaminarayan Akshardham', N.H. 24, Akshardham Setu, Yamuna Kinara, New Delhi - 110 092. India.

Publishers:

SWAMINARAYAN AKSHARPITH
Shahibaug, Amdavad - 380 004. India.

--- Edition:

March 2009. Copies: --,--- (Total Copies: --,---)

Warning:

Copyright: ©Swaminarayan Aksharpith

This book is published by Swaminarayan Aksharpith. Material from this book cannot be used without due acknowledgement to Swaminarayan Aksharpith, Shahibaug, Amdavad. For any reprints the written permission of the publishers is necessary.

ISBN: -

रजूकर्ता : बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था (बी.ए.पी.एस.)
'स्वामिनारायण अक्षरधाम', नेशनल हाईवे 24, अक्षरधाम सेतु,
यमुना किनारा, नई दिल्ली - 110 092.

प्रेरणामूर्ति : प्रकट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज

सूचना : सर्वाधिकार सुरक्षित : © स्वामिनारायण अक्षरपीठ

इस पुस्तक के अंश किसी भी स्वरूप में प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की लिखित सम्मति अनिवार्य है।

--- संस्करण : मार्च, 2009

प्रति : --,--- (कुल प्रति : --,---)

मूल्य : रु. --.--

मुद्रक एवं प्रकाशक :

स्वामिनारायण अक्षरपीठ

शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.

कृपाकथन

ब्रह्मस्वरूप स्वामीश्री योगीजी महाराज द्वारा स्थापित व पोषित युवक प्रवृज़ि तीव्र गति से विस्तृत होती जा रही है। इस प्रवृज़ि से जुड़े युवाओं की आकांक्षा तथा ज्ञानपिपासा को संतुष्ट करने तथा उन्हें भगवान स्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोज़म के सिद्धांत की ओर अभिमुख करने के उद्देश्य से बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोज़म स्वामिनारायण संस्था ने क्रमबद्ध पुस्तकों के प्रकाशन का आयोजन किया है।

इन पुस्तकों द्वारा बालकों और युवाओं को व्यवस्थित, सुगम तथा सरल ढंग से सत्संग का शुद्ध ज्ञान प्राप्त होगा। भगवान स्वामिनारायण द्वारा उद्‌बोधित आदर्शों के पालन व प्रचार के लिए ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज द्वारा स्थापित यह संस्था, इस प्रकार की अनेक सत्संग प्रवृज़ियों में संलग्न है कि जिससे विश्व में हमारी महान हिन्दू संस्कृति का प्रचार व प्रसार हो।

भगवान स्वामिनारायण का दिव्य संदेश विश्व के कोने-कोने में प्रसारित हो तथा सभी मुमुक्षुओं को शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति हो इसी हेतु इन पुस्तकों का भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रकाशन किया गया है।

इन पुस्तिकाओं के आधार पर सत्संग शिक्षण परीक्षाएँ आयोजित की जाएँगी साथ ही बालकों-युवकों को प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया जाएगा। इस पुस्तकों को तैयार करने में ईश्वरचरण स्वामी, रमेशभाई दवे, किशोरभाई दवे तथा अन्य सहयोगियों ने भारी परिश्रम उठाया है, उनको हमारे आशीर्वाद हैं।

अत्यंत स्नेहपूर्वक

जय श्री स्वामिनारायण।

शास्त्री नारायणस्वरूपदासजी

(प्रमुखस्वामी महाराज)

क्रमिका

1. भगवान की देन 1
2. धुन 2
3. प्रार्थना 4
4. पूर्ण पुरुषोज़म सहजानंद स्वामी 6
5. पूजा 9
6. शूरवीर बालभज़्त 12
7. गंगा माँ 13
8. अखण्डानन्द स्वामी 16
9. आरती 18
10. वीर भगुजी 21
11. सामत पटेल 24
12. थाल (नैवेद्य स्तवन) 25
13. जोधो अहीर 28
14. सोढ़ी गाँव की बीबी 31
15. अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी 33
16. स्वामी की बातें 38
17. शास्त्रीजी महाराज 49
18. घर और शाला में बर्ताव 50
19. पूजा डोडिया 52
20. नाथ भज़्त 56
21. बालमण्डल की सभा में बर्ताव 58
22. विजापुर की वजीबाई 61
23. कीर्तन 65

॥ श्रीस्वामिनारायणो विजयते ॥

हम अभी स्वामी के बालक, मरेंगे स्वामी के लिए ।
हम अभी श्रीजी के युवक, लड़ेंगे श्रीजी के लिए ॥

नहीं डरते नहीं करते, हमारी जान की परवाह ।
हमें है भय नहीं किसीसे, जन्मे हैं मृत्यु के लिए ॥

हमने है यज्ञ आरंभा, सदा बलिदान हम देंगे ।
हमारा अक्षरपुरुषोत्तम, गुणातीत गान के लिए ॥

हम अभी श्रीजी की संतान, अक्षर में वास हमारा है ।
स्वधर्मी भभूत रमाई है, अब हमें शर्म किसके लिए ॥

मिले हैं मोती-से स्वामी, हुए हम पूर्णकाम अभी ।
प्रगट पुरुषोत्तम पाये, संत से मुक्ति के लिए ॥

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण

1. भगवान की देन

आप पाँच मिनट नाक-मुँह बन्द कर बैठ जाइए। आप कैसा अनुभव करेंगे? उस समय आपका दम घूटने लगता है। ज़्योंकि आपको प्राणवायु नहीं मिलता है। कुछ पलों के लिए हवा न मिलने पर हम मृत:प्राय हो जाते हैं। ज़्या हमें इतनी महज़्वपूर्ण हवा की कीमत चूकानी पडती है? नहीं, भगवान ने हमें हवा बिल्कुल मुज़्त में दी है।

उसी तरह बिना पानी के भी हम जिन्दा नहीं रह सकते। ऐसा अमृत के समान जल भगवान ने हमें मुज़्त में दे दिया है, जो नदी, तालाब, कुआँ और बरसात के जरीये हमें हमेशा मिलता रहता हैं।

इस प्रकार भगवान हमें हवा, पानी, अनाज़, कपड़ें सब कुछ देते हैं। इसके इसके उपरांत सूर्य, चन्द्र, फल, फूल, विविध प्रकार की वनस्पति आदि बहुत कुछ भगवान ने हमें मुज़्त में दिया है। उनके द्वारा मिले ऐसे उपहारों से ही हम सुखी हैं।

अब देखें अपने शरीर की ओर। भगवान ने हमें कितने सुंदर और उपयोगी अंग दिए हैं! आँख, नाक, कान, हाथ, पैर आदि अंग देकर भगवान ने हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। बिना हाथ के लूले आदमी को या बिना पाँव के लंगड़े व्यज़्ति को, बिना आँख के अंधे इनसान को अथवा बिना वाणी के गुंगे मनुष्य को ज़्या आपने देखा है? उनके कष्टों को देखते ही हमारे मन में एक विचार अवश्य आ जाता है कि भगवान की हम पर बहुत बड़ी कृपा है कि हमारे प्रत्येक अंग को भगवान ने सकुशल रखा हैं।

वास्तव में हम पर भगवान के अनेक-अनेक उपकार हैं। इसीलिए हमारा कर्तव्य है कि हम उनका स्मरण करें, उनकी सेवा करें, उन्हें प्रसन्न करने की निरंतर कोशिश करें। अब प्रश्न यह उठता है कि हमें उनको प्रसन्न करने के लिए ज़्या करना चाहिए?

(1) सबसे पहले हम मन्दिर में जाने की आदत डालें।

(2) दूसरा, वहाँ भज़्तिभाव के साथ भगवान का दर्शन करें।

(3) तीसरा, वहाँ उपस्थित सन्तों की सेवा करें।

ज़्योंकि, सन्तों की सेवा करने से भगवान प्रसन्न होते हैं।

आपने सुना होगा कि कुछ लोग कहते हैं कि, हमें बचपन में भगवान की भज़्ति करने की कोई आवश्यकता नहीं। भगवान की साधना तो बुढ़ापे में की जाती हैं। परंतु यह सोच गलत हैं। भज़्त ध्रुवजी ने तथा बाल भज़्त प्रह्लादजी ने बचपन में ही भगवान की साधना की थी। मीरांबाई भी बचपन से ही भगवान की भज़्ति किया करती थीं। बचपन में जैसी आदत होती है, वैसी आदत हमें जीवनभर रहती है। बचपन में यदि भगवान के भजन की आदत नहीं पड़ेगी तो बुढ़ापे में भगवान की साधन कैसे कर पाओगे? इसीलिए हम आज से ही अर्थात् बचपन से ही भगवान का भजन करने की आदत डालें ताकि उनको प्रसन्न कर सकें।

2. धुन

'रामायण' की रचना करनेवाले वाल्मीकि ऋषि का नाम तो आप सभी ने सुना ही होगा। वे अपने आरंभिक जीवन में लुटेरे थे। मनुष्यों को मारना, उनका धन लूटना आदि अनेक प्रकार के पाप किया करते थे। ऐसा पापी भी रामनाम के जप से हमेशा के लिए सुधर गया और भगवान का भज़्त बन गया। उन्होंने बहुत बड़े ऋषि के रूप में अपना नाम कमाया और रामायण की रचना की।

ऐसा ही एक दूसरा पापी था उसका नाम था, अजामिल। वह बड़ा पापी बन गया था। उसके चार लड़के थे। किसी समय नारदजी उसके घर पधारे। नारदजी ने उसको उपदेश देते हुए कहा, 'तू भगवान के नाम का जप किया कर, तू अवश्य अपने पापों से मुज़्ति पाएगा।' परंतु अजामिल पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। नारदजी ने उसकी भलाई के लिए एक युज़्ति रची। उन्होंने अजामील के सबसे छोटे लड़के का नाम 'नारायण' रख दिया। जब भी अजामिल उसे पुकारता तब बरबस उसे 'नारायण' का नाम तो लेना ही पड़ता था। जब उसके मरने का समय आ गया, तब उसके पापो को देखकर उसके प्राण नरक में ले जाने के लिए कुछ यमदूत आ पहुँचे। अजामिल तो उन्हें देखते ही डर गया और वह बड़े जोरों से अपने पुत्र 'नारायण' को पुकार ने लगा। 'नारायण' शज़्द सुनते ही यमदूत तुरन्त भाग निकले। अजामिल की जान बच गई। भगवान के नाम का कितना बड़ा प्रभाव!

भगवान स्वामिनारायण के समय में गुजरात में 'जोबनपगी' नामक एक लुटेरा था। वह लोगों को डाँटता, डराता और जान से मार ड़ालता। उसका सामना करने की किसीकी हिंज़्मत नहीं होती थी। बड़ौदा के राजा के सिपाही तक उससे डरते थे। लोगों की माल-मिल्कियत लूटना, खेतों में खड़ी फसल काट लेना तथा दूर दूर तक जाती तक बारातों को लूट लेना उसका पेशा था। ऐसे जोबन को श्रीहरि ने सत्संगी बना दिया! तथा उसके हाथ में माला थमा दी। अब उसे केवल भजन करने की लगनी लगी थी। भजन तथा धुन से हमारी भी बुरी आदतें छूट जाती हैं। अत: आइये, हम भी धुन करें, भजन करें। ताकि हमारे भीतर भी परिवर्तन होना प्रारंभ हो।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि भजन कैसे करें तथा किसका करें ?

भजन करने के लिए हमें पालथी लगाकर बैठ जाना चाहिए। आँखें मूँद कर भगवान तथा गुरु का स्मरण करना चाहिए। उनका स्मरण करके ही भजन का आरज़्भ करना चाहिए। इसीको नामधुन भी कहते हैं। भगवान के स्मरण के बिना की गई धुन वास्तव में व्यर्थ है। धुन करते समय बाहरी

विचारों का प्रवेश न होने दें। साथ साथ हमें यह मालूम होना चाहिए कि भगवान तथा भगवान के उज़म भज़्त का भजन हमें साथ-साथ करना चाहिए। जैसे स्वामी और नारायण, अक्षर और पुरुषोज़म, आत्मा और परमात्मा, ब्रह्म और परब्रह्म। हमें निज़्न लिखित प्रकार से धुन करनी चाहिए:

स्वामी याने गुणातीतानन्द स्वामी
नारायण याने सहजानन्द स्वामी
अक्षर याने गुणातीतानन्द स्वामी
पुरुषोज़म याने सहजानन्द स्वामी
आत्मा याने गुणातीतानन्द स्वामी
परमात्मा याने सहजानन्द स्वामी
हम परब्रह्म याने गुणातीतानन्द स्वामी
परब्रह्म याने सहजानन्द स्वामी

हमें किसका भजन करना चाहिए?
भगवान तथा उनके उज़म भज़्त का अर्थात् स्वामी एवं नारायण का।
अब बताईये की वह भगवान अर्थात् कौन?
भगवान अर्थात् परब्रह्म सहजानन्द स्वामी।
उज़म एवं आदर्श भज़्त कौन? अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी।
हमारे गुरु कौन? प्रमुखस्वामीमहाराज।
(स्वामीश्री नारायणस्वरूपदासजी)
उनके गुरुदेव कौन? योगीजी महाराज। (स्वामीश्री ज्ञानजीवनदासजी)
उनके गुरुदेव कौन? शास्त्रीजी महाराज। (स्वामीश्री यज्ञपुरुषदासजी)
उनके गुरुदेव कौन? भगतजी महाराज। (प्रागजी भज़्त)
उनके गुरुदेव कौन? अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी।
हमारे इष्टदेव कौन? भगवान स्वामिनारायण।

3. प्रार्थना

भगवान स्वामिनारायण अर्थात् सहजानन्द स्वामी हम सबके पिता हैं। हम सब उनके बालक हैं। हम लोग अच्छा भोजन, नये कपड़ें, नई पुस्तकें इत्यादि चीज़ों की आवश्यकता पड़ने पर अपने पिता से ही माँगते हैं और

पिता हमें वे चीज़ें लाकर देते हैं। हालाँकि हम जानते हैं कि, ऐसी चीज़ों से हम पूर्ण मानव नहीं बन सकते। इन्सान बनने के लिये हमें सद्‌बुद्धि और सद्‌गुणों की आवश्यकता पड़ती है। इन दोनों चीज़ें हमें भगवान से ही प्राप्त होती हैं। ज़्योंकि वे ही उन चीज़ों के मालिक हैं। यदि हम शुद्ध हृदय से भगवान के पास इन चीज़ों को माँग लें तो वे हमें अवश्य अच्छी बुद्धि एवं सद्‌गुण प्रदान करते हैं। भगवान के पास सद्‌गुण तथा सद्‌बुद्धि की याचना करना उसी को प्रार्थना कहते है। प्रार्थना का अर्थ है, माँगना। तो चलिये; हम भगवान के पास नियमित रूप से प्रार्थना करें।

प्रार्थना के समय पालथी लगाकर – स्थिर आसन से बैठना चाहिए। आँखें मूँदकर भगवान तथा गुरु का स्मरण करके उन्हें प्रणाम करना चाहिए! तो मित्रो, चलो हम हाथ जोडकर प्रार्थना का आरंभ करें :

श्रीहरि जय जय जय जयकारी.... (2)

अक्षरधाम के धामी आप हैं,
पुरुषोज़म परब्रह्म हरि हैं,
भज़्तजनों के भवभयहारी.... श्रीहरि.
प्रकट हरि गुरु दर्शन चाहूँ,
प्रभु तव नाम हमेशा जापूँ,
तव मूर्ति मम हृदयविहारी.... श्रीहरि.
सद्‌बुद्धि, सद्‌गुण प्रभु दीजै,
अभय हस्त मम सिर पर कीजै,
विघ्न सकल को सद्य विदारी.... श्रीहरि.
शास्त्रीजी के गुण नित गाऊँ,
योगीजी का सुमिरन करहूँ,
तव चरणों में सीस नँवाऊँ,
आशिषवर दो हे सुखकारी.... श्रीहरि.

हे सहजानन्द स्वामी! आप सदा जयकारी हैं। आप अक्षरधाम के मालिक हैं। आप पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुषोज़म हैं। आप परब्रह्म परमात्मा हैं। आप भज़्तजनों के जन्ममरण के दु:ख को दूर करनेवाले हैं।

हे सहजानन्द स्वामी! आप इस पृथ्वी पर हमेशा विचरते हैं। कृपा

कर मुझे दर्शन दीजिए। हे प्रभु! हम आपके नाम का सतत जाप करते हैं, और हमेशा आपके स्वरूप का हृदय में ध्यान करते हैं।

हे सहजानन्द स्वामी! आप हमको अच्छी बुद्धि एवं अच्छे गुण दीजिए। अपना वरद हस्त हमारे सिर पर रखिए, जिससे हम निर्भय रहें और हमारे सभी विघ्न तुरन्त दूर हो जाएँ।

हम अपने गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज के गुणों का चिन्तन करते हैं; हम योगीजी महाराज का नित्य स्मरण करते हैं। हमें आशीर्वाद दीजिए ताकि हम सुखी हों।

इस प्रकार नियमित रूप से हम भगवान की प्रार्थना करें, भगवान अवश्य हमें सद्बुद्धि एवं सद्गुण देंगे।

4. पूर्ण पुरुषोत्तम सहजानन्द स्वामी

हमारे इष्टदेव 'सहजानन्द स्वामी' हैं। जिनको हम 'स्वामिनारायण भगवान' कहकर भी पुकारते हैं। उनके जीवन के विषय में हमें संपूर्ण जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

संवत् 1837, चैत्र शुज़्ला 9 रामनवमी के दिन उज़रप्रदेश के अयोध्या शहर के नज़दीक छपिया गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में उनका जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम धर्मदेव और माता का नाम भज़्तिदेवी था। उनके बड़े भाई रामप्रतापजी थे और छोटे भाई इच्छारामजी थे। उनके मातापिता बड़े पवित्र धर्मात्मा थे। वे दोनों अखण्ड कृष्णकीर्तन किया करते थे। सहजानन्द स्वामी के बचपन का नाम 'घनश्याम' था।

घनश्याम बचपन से ही चमत्कारिक थे। वे सबको प्रिय थे। बचपन के उनके चमत्कारों को देखकर गाँववाले यही कहा करते थे कि यह बच्चा तो भगवान का अवतार ही है। छोटी उम्र में 'घनश्याम' अपने पिता के साथ एक बार वाराणसी (काशी) गए थे, वहाँ पण्डितों की सभा में शास्त्रचर्चा में उन्होंने विजय पाई थी; यह देखकर लोग आश्चर्यचकित हो गए थे। 'घनश्याम' हमेशा अपने मातापिता की आज्ञा मानते और सारा दिन भगवान का भजन किया करते । वे खेलकूद और गपशप में कभी समय नहीं गँवाते थे।

मातापिता के देहावसान के बाद घनश्याम एक दिन बिना किसी को

कहे घर-संसार को छोड़कर लोक कल्याण के लिए हिमालय की ओर चल दिए। तपश्चर्या के उन दिनों में उन्होंने ब्रह्मचारी का वेष धारण किया था। जंगलों में उनका विचरण था और पर्वतों पर उनकी तपश्चर्या थी। उस वक़्त लोग उन्हें 'नीलकण्ठवर्णी' नाम से पहचानते थे। नदी-नाले, सरोवर, जंगल आदि को पवित्र करते हुए, जंगली हिंसक पशुओं से बिना डरे, सर्दी, गर्मी और वर्षा के कष्टों को सहते हुए वे कई स्थानों में गए और उन्होंने वहाँ रहने वाले हज़ारों साधु-सन्यासियों का कल्याण किया। दज़्भी और पाखंडी गुरुओं की पोल खोल दी। कहा जाता है कि हिमालय में तप करनेवाले नव लाख योगियों का भी उन्होंने उद्धार किया। वहाँ के एक महान तपस्वी गोपाल योगी से उन्होंने अष्टांगयोग का अध्ययन किया, बदले में उनका भी कल्याण किया।

सारे भारत देश के मठ-मन्दिरों की यात्रा करके वे सौराष्ट्र पधारे। 'लोज' नामक गाँव में रामानन्द स्वामी का आश्रम था। उस आश्रम में मुक़्तानन्द स्वामी से उनकी मुलाकात हुए बातचीत में उन्होंने पाँच प्रश्न पूछे। स्वामि मुक़्तानन्दजी ने उन प्रश्नों के बहुत ही सुंदर उज़र दिए, इससे प्रसन्न होकर वे नीलकंठ वहाँ ठहर गए। उस वक़्त 'रामानन्द स्वामी' भुज (कच्छप्रदेश) में निवास करते थे। कुछ समय के बाद जब रामानन्द स्वामी पीपलाणा (गाँव) में आये, तब उनसे नीलकण्ठ ब्रह्मचारीजी की भेंट हुई। स्वामीजी उन्हें देखते ही बोल उठे कि 'मैं तो डुगडुगिया बजानेवाला हूँ, बाकी असली खेल तो यह ब्रह्मचारी ही दिखाएगा।' इसके बाद कुछ ही दिनों में रामानन्द स्वामी ने उन्हें 'संयासदीक्षा' दी, और 'सहजानन्द स्वामी' 'नारायणमुनि' दो नामाभिधान किए। उनके अनुयायी श्रीहरि को 'महाराज' या 'श्रीजीमहाराज' कहकर पुकारने लगे।

रामानन्द स्वामी ने अपने सभी शिष्यों में से सहजानन्द स्वामी को विशेष योग्य समझकर उन्हें अपना उज़राधिकारी नियुक़्त कर धर्मधुरा अर्पण की। सहजानन्द स्वामी ने धर्मधुरा स्वीकार करते हुए अपने गुरु रामानन्द स्वामी से दो वरदान माँगे :

(1) आपके भक़्त को एक बिच्छू के काटने पर जो दुःख होगा, उससे करोड़गुना दुःख मुझे हो।

(2) आपके भज़्त के भाग्य में यदि भीख माँगनी लिखी हो, तो वह मेरे भाग्य में लिख दिया जाए, परन्तु आपके भज़्त अन्न-वस्त्र से कभी दु:खी न रहें।

रामानन्द स्वामी ने प्रसन्नतापूर्वक दोनों वरदान दिए। गुरु के परलोक सिधारने के बाद श्रीजीमहाराज ने 'स्वामिनारायण' का भजन शुरू करवाया। अनेक चमत्कार दिखाए। कई जीवों को समाधि लगवाकर अपने अपने इष्टदेव के दर्शन करवाएँ। ऐसे अद्‌भुत ऐश्वर्य को देखकर लोग श्रीजीमहाराज को महापुरुष ही नहीं; भगवान ही स्वीकार ने लगे।

उनके प्रताप और प्रभाव को सुनकर सारे भारत से अनेक मुमुक्षु उनके पास त्यागी बनने के लिए आने लगे। उन्होंने कईं सन्तों तथा महन्तों को एक ही रात में परमहंस की दीक्षा दी। पाँचसौ परमहंस बनाए, जो जीवनभर भगवान स्वामिनारायण के उपदेश तथा महिमा का प्रचार-प्रसार करने के लिए गाँव गाँव विचरण करते रहे।

भगवान स्वामिनारायण के द्वारा हुए समाजसुधार के अनगिनत कार्यो में सबसे महज़्वपूर्ण कार्य था, ज़ी-उत्कर्ष का। इसके उपरांत अकाल के समय उन्होंने कई स्थान पर सदाव्रत और अन्नक्षेत्रों का प्रारंभ करवाया। कुएँ तथा तालाबों का निर्माण करवाया। अशिक्षित तथा दरिद्र जनता के लिए शिक्षा लेने की व्यवस्था करवाई। स्त्रीशिक्षा का भी प्रचार किया। समाज में चल रहे अनेक कुरिवाज बंद करवाए और विशेषरूप से हिंसक यज्ञ बंद करवाकर अहिंसक यज्ञों का प्रचार एवं प्रसार किया।

श्रीजीमहाराज ने सारे गुजरात में छ: मन्दिरों का निर्माण करवाया। सन्तों को संस्कृत की शिक्षा देकर उनके द्वारा आदर्श धर्मग्रन्थों की रचना करवाई। विद्वान सन्तों ने गुजराती में भी कई 'कीर्तन' (भज़्तिपद) रचे हैं। उन्होंने अपने त्यागी शिष्यों के लिए कड़े नियम बनाए, जैसे कि, संतों को स्त्री तथा धन का स्पर्श तक नहीं करना चाहिए।' उनके गृहस्थ सत्संगी को भी नियमों का पालन करने के लिए तथा आत्मकल्याण के लिए 'शिक्षापत्री' नाम से सुंदर आचारसंहिता का ग्रंथ दिया।

उन्होंने अपने सभी आश्रितों को आज्ञा की थी कि, वे प्रतिवर्ष एक मास जूनागढ़ रहकर गुणातीतानन्द स्वामी का उपदेश सुनें और गोपालानन्द

स्वामी की आज्ञा में रहें। वड़ताल में मन्दिर बनाकर उन्होंने प्रथम देहरे में अपनी मूर्ति प्रतिष्ठित की। गढ़पुर के ठाकुर साहब दादाखाचर के दरबार भुवन को श्रीजीमहाराज ने तीस साल तक सत्संग प्रचार का मुज़्य केन्द्र रखा। यहाँ अनेक उत्सव मना कर भज़्तों को दिव्य आनंद की अनुभूति करवाई। इस प्रकार लाखों जीवों का कल्याण किया। वहीं संवत् 1886, (सन् 1830) ज्येष्ठ शुज़्ला दशवीं के दिन उन्होंने अपनी जीवन लीला समटे ली, आज उनके अग्निसंस्कार के स्थान पर गढ़पुर में सुंदर स्मारक का निर्माण किया गया है।

5. पूजा

हम रोज स्नान करते हैं, भोजन करते हैं, सोते हैं परन्तु कभी हमारा जी नहाने, खान या सोने से ऊबता नहीं। उसी प्रकार हमें पूजा भी हमेशा करनी चाहिए। प्रात:काल उठते ही कुछ लोग 'बेड-टी' लेते हैं, जो बहुत बुरी आदत हैं। हमे उठते ही प्रभु स्मरण करते शौच तथा दाँत स्वच्छ करके स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् भगवान की पूजा करके ही दूसरे काम करने चाहिए। हमारे सत्संग में ज्यादातर लोग बिना पूजा किये भोजन या नाश्ता तो ज़्या पानी तक नहीं पीते।

प्रात:काल पूजा करने से हमारा मन शान्त और पवित्र हो जाता है। उससे हमारे मन में पूरा दिन अच्छे विचार आते रहते हैं। सुबह भगवान का स्मरण करने से हमारा सारा दिन आनन्द में बीतता है। इस विषय पर हमे भारत के महान भज़्त राजा अज़्बरीष से प्रेरणा लेनी चाहिए। वे बड़े राज्य के महाराजा थे। उनको कितना काम रहता होगा! फिर भी वे रोज प्रात:काल उठकर घण्टों तक भगवान की पूजा किया करते थे।

हमें पूजा किस तरह करनी चाहिए? यहाँ नित्य पूजा की पद्धति का विवरण किया गया हैं: सूर्योदय से पहले उठना, पूजा की सबसे प्रथम शर्त है। इस लिए हमें सुबह जल्दी उठने की आदत रखनी चाहिए। उठते ही हम भगवान का नाम-स्मरण करें। बाद में शौच, दातून से निवृज़ होकर स्वच्छ जल से स्नान करें। स्नान करते हुए 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' का मंत्रजाप करे ताकि हमारा मन पूजा के लिए तैयार हो जाए। भगवान

स्वामिनारायण ने पूजा के नियम लिखते हुए कहाँ है कि स्नान के बाद हमे धुले हुए स्वच्छ कपड़े पहनकर पूर्व अथवा उज़र दिशा की ओर मुँह रखकर पूजा करनी चाहिए। पूजा का आसन भी शुद्ध, स्वच्छ होना आवश्यक हैं। हमें पूजा के लिए पवित्र स्थान का ही उपयोग करना चाहिए।

ठीक अपने सामने एक स्वच्छ रूमाल अथवा कपड़ा बिछाकर उस पर भगवान की मूर्ति रखें। पूजा में अक्षरपुरुषोज़म महाराज अर्थात् भगवान स्वामिनारायण तथा गुणातीतानन्द स्वामी की मूर्तियों के साथ हमारी गुरुपरंपरा की मूर्तियाँ रखनी चाहिए। इस प्रकार क्रमशः भगतजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज तथा प्रमुखस्वामी महाराज की मूर्तियाँ स्थापित करके पूजा का प्रारंभ करना चाहिए। सबसे पहले

शुद्ध जल से चन्दन तैयार करके तिलक करें तथा बीच में कुमकुम का टीका लगाए। बाद में नेत्र मूँदकर दो मिनट भगवान तथा गुरुदेव का ध्यान करें। प्रार्थना करके भगवान का आवाहन करते हुए कहें कि 'हे प्रभु! आप मेरी पूजा का स्वीकार करने के लिए पधारें। इस के बाद आवाहन मंत्र का उच्चार करें:

उज़िष्ठोज़िष्ठ हे नाथ! स्वामिनारायण प्रभो ।
धर्मसूनो! दयासिन्धो! स्वेषां श्रेयः परं कुरु ॥
आगच्छ भगवन्देव! स्वस्थानात् परमेश्वर ।
अहं पूजां करिष्यामि सदा त्वं सज़्मुखो भव ॥

इस मंत्र के बाद भगवान को नमस्कार करके आँखें और मन को एकाग्र करके 'स्वामिनारायण' नाम की पाँच माला फेरें। दायें हाथ के बीच की दो बड़ी अँगुलियों पर माला रखकर अँगुठे से माला फेरना चाहिए। माला में 108 मनके होते हैं, प्रत्येक मनके पर 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करें। सुमरु आने पर रुकें तथा माला घुमाकर फिर मनके फेरना शुरू करें... इस प्रकार पाँच माला करें। मंत्र जाप के समय मौन रखना ही उचित हैं। उस समय किसीसे बात न करें तथा भगवान के अतिरिज़्त दूसरे विचार भी न लाएँ।

तत्पश्चात् पाँच प्रदक्षिणा करके भगवान को पाँच बार साष्टांग दंडवत् प्राणाम करें, फीर प्रार्थना करें कि 'हे प्रभो! बुरे संग से मेरी रक्षा करना मैं आपको प्रसन्न कर सकूँ ऐसी सद्बुद्धि देना तथा आपके प्रति मेरे दिल में विशेष श्रद्धाभज़्ति उत्पन्न हो जिससे से मैं आदर्श सत्संगी बन सकूँ। मुझे आशीर्वाद दीजिए और पूजा में यदि कोई भूल हो गई हो तो मुझे क्षमा कीजिए।' अंत में यह विदाय मंत्र का उच्चार करें:

स्वस्थानं गच्छ देवेश! पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकामप्रसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥

अन्त में शिक्षापत्री के पाँच श्लोकों का पाठ करें। भगवान को प्रणाम करके पूजाविधि पूर्ण करें। इस प्रकार नित्य पूजा करने में केवल 15 मिनट खर्च करना पड़ता हैं। परन्तु ऐसा करने से हमारी बुद्धि पवित्र और तेजस्वी बनती हैं एवं पूरा दिन उत्साह और उमंग में बितता है।

6. शूरवीर बालभक्त

भगवान स्वामिनारायण के आदेश के अनुसार उनके सन्त सदाचार वृद्धि तथा सत्संग के सिद्धातों की पुष्टि के लिए गाँव-गाँव विचरण करते थे। एक बार जामनगर जिले के एक छोटे गाँव में सत्संग का आयोजन हुआ। एक किसान का छोटासा लड़का भी कार्यक्रम में शामिल हुआ। संतों के साथ स्नेह होते ही वह श्रद्धापूर्वक सत्संगी हो गया। यह बालभज़्त प्रतिदिन पूजा करता, तिलक लगाता, मन्दिर जाता तथा बड़े प्रेमभाव से भजनभज़्ति करते हुए 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करता रहता।

उसके पिता सत्संगी नहीं थे, इसीलिए लड़के का भजन भज़्ति करना उनको तनिक भी पसंद नहीं था। वे रोज अपने लड़के से डाँटते रहते कि 'स्वामिनारायण' का नाम मत ले। परन्तु वह तो शूरवीर सत्संगी था, भज़्त प्रह्लाद की तरह अपनी बात में अटल था। वह अपनी श्रद्धा से अशं भर विचलित नहीं हुआ। उसके पिता अब तो समझाने के बदले मारने और पीटने लगे पर बालक ने भज़्ति का मार्ग नहीं छोडा।

एक दिन उसके पिता का गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने बालक को बुलाकर कहा, 'अब तुझे आखरी बार कहता हूँ, यदि तू 'स्वामिनारायण' का नाम नहीं छोड़ेगा तो मैं तुझे जान से मार डालूँगा।'

लड़के ने कहा, 'पिताजी! आप जो चाहें सो करें, मुझसे भगवान का नाम नहीं छोडा जाएगा।'

पिता ने उसे उठाकर बैलगाड़ी के जुएठे के साथ जोत दिया और गले पर रस्सी लपेट कर कहा 'अब यदि स्वामिनारायण की कण्ठी (माला) नहीं उतारी, तो मैं गाड़ी को ऐसे उठाऊँगा कि तेरी गर्दन में फाँसी लग जाएगी, और तू मौत की नींद सो जाएगा।'

इतनी धमकी पर भी लड़का मुस्कुरा रहा था। उसके मन में लेश भी डर नहीं था। उसने फौरन उज़र दिया, 'मैं मरने से नहीं डरता पिताजी, आप पिता हैं, कुछ भी कर सकते हैं, मैं स्वामिनारायण का नाम और उनकी कण्ठी का त्याग किसी भी स्थिति में नहीं कर सकता, मौत भी मुझे मंजूर है।'

ऐन वज़्त पिता ने क्रोध में आकर बैलगाड़ी उठा ली, लड़के के गले

में फाँसी आ गई, वह शान्तचिज़ से स्वामिनारायण मंत्र का स्मरण करते करते हुए चल बसा।

गढ़डा में श्रीहरि के पास जब यह खबर पहुँची तो वे उदास होकर आशीर्वाद देने लगे, 'सुनो संतों, प्रह्लादजी की तो भगवान ने रक्षा की थी तब प्रह्लाद ने भज़्ति की, परन्तु इसकी तो रक्षा नहीं हुई तब भी भज़्ति करना नहीं छोड़ा, इसलिए उसका तो महान संतों की तरह कल्याण हो गया।'

मित्रों, भगवान चाहें हमारी रक्षा करें या न करें, भारी दु:खों से हमे बचाए या न बचाए फिर भी भगवान की भज़्ति करना तथा उनके आश्रय को हमें कभी छोड़ना नहीं चाहिए।

7. गंगा माँ

अहमदाबाद के पास जेतलपुर नाम का एक गाँव है। वहाँ गंगा माँ नाम की एक ब्राह्मण वृद्धा रहती थीं। वे आत्मानन्द स्वामी की शिष्या थीं। आत्मानन्द स्वामी के शिष्य रामानन्द स्वामी थे और रामानन्द स्वामी के शिष्य सहजानन्द स्वामी थे। इसीलिए श्रीजीमहाराज का और गंगा माँ का

माता-पुत्र सा नाता बन गया था। श्रीजीमहाराज जब कभी जेतलपुर पधारते तो गंगा माँ उनको 'आओ भतीजा' अथवा 'आओ बेटा' कहकर प्यार से उनका स्वागत करती थीं। श्रीहरि भी उनका बड़ा आदर करते और कहते, 'हाँ, माँ, मैं आ गया।'

गंगा माँ श्रीहरि पर बहुत प्यार बरसातीं, परन्तु 'ये साक्षात् प्रकट स्वरूप भगवान हैं' इस बात की प्रतीती उन्हें नहीं थी। एक दिन रामानन्द स्वामी ने स्वप्न में गंगा माँ को दर्शन देकर कहा कि 'आप ज़्यों नहीं मानती कि सहजानन्द स्वामी स्वयं भगवान हैं, अक्षरधाम के अधिपति हैं। कलियुग में प्रकट स्वरूप श्रीहरि हैं। मैं तो उन्हीं की आज्ञा के अनुसार केवल डुगडुगिया बजाता था, असली काम करनेवाले तो ये ही हैं, तुम उनको 'भतीजा' और 'बेटा' कहकर पुकारती हो, वह उचित नहीं है। तुमने जो गद्दीतकिया मेरे लिए अलग बाँधकर रखा है, वह खोल कर सहजानंद स्वामी के लिए बिछाओ और उनसे क्षमा माँगो, मैं तुम पर प्रसन्न रहूँगा, वे कुछ ही दिनों में तुज़्हारे यहाँ पधारेंगे, अब बड़ी धूमधाम से उनका स्वागत करना।' इस स्वप्न के बाद गंगा माँ की शंका दूर हो गई। वे श्रीहरि की प्रतीक्षा करने लगीं।

कुछ दिनों के बाद गंगा माँ को खबर मिली की श्रीहरि जेतलपुर आने वाले हैं। उन्होंने तुरन्त गाँव के हरिभज़्तों का एकत्र किया और कहा, 'श्रीहरि के स्वागत के लिए शहनाइ और ढोल बजानेवालों को बुला लो।'

गंगा माँ ने अपनी लड़की से श्रीफल के साथ घड़ा उठवाया। स्वयं अपने हाथ में कुमकुम, अक्षत और फूलों से पात्र लिया। सब कीर्तन-भजन करते हुए आगे बढ़े।

श्रीहरि माणकी घोड़ी पर सवार होकर जेतलपुर पधारे। जरियान वस्त्रों में उनकी दिव्य शोभा बनी हुई थी। हरिभज़्तों ने उनको दंडवत् प्रणाम किया, आदरभाव से पूजन किया। महिलाओं ने दूर से भगवान स्वामिनारायण को प्रणाम किया। इस प्रकार गायन-वादन के साथ श्रीजीमहाराज ने गाँव में प्रवेश किया।

गाँव में प्रवेश करते ही श्रीहरि सबसे पहले गंगा माँ के घर पधारे। 'महाराज! इस पलंग पर लगे गद्दी-तकिये पर आप बिराजमान हों।' गंगा माँ

ने प्रार्थना की। तुरन्त श्रीजीमहाराज ने कहा, 'माँ! आप पहले की तरह 'भतीजा या बेटा कहेंगे तभी मैं गद्दी पर बैठूँगा।'

गंगा माँ ने कहा, 'अब तो मुझसे ऐसा नहीं कहा जाएगा।'

'तो मैं गद्दी पर नहीं बैठूँगा।' महाराज भी अपने निर्णय पर अटल रहे परन्तु बड़ी विनम्रता से गंगा माँ ने कहा दिया, 'महाराज! मैं आज तक आपके असली स्वरूप को नहीं जानती थीं, इसीलिए भतीजा अथवा बेटा

कहा करती थीं, परन्तु अब तो रामानन्द स्वामी ने मेरी आँखें खोल दी हैं। आप स्वयं पुरुषोज़म परब्रह्म हैं। आपके साथ मैंने आजतक जो व्यवहार किया है उसके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ, अब कृपया आप इस गद्दी पर बिराजिए और दर्शन दीजिए।'

अन्तर्यामी श्रीहरि सब कुछ जानते थे, उन्होंने हँसते कहा, 'इसमें अपराध की तो बात ही नहीं हैं, और यदि हैं तो समझो कि माफ हो गया, लेकिन आप बड़े स्नेहभाव से मुझे 'बेटा' कहकर पुकारती थीं; वह मुझे बहुत पसंद आता था।' श्रीहरि अब गद्दी-तकिये पर बिराजमान हुए। गंगा माँ को श्रीहरि की अपार दिव्यता का अनुभव हुआ।

गंगा माँ महाराज के लिए बड़ी स्वादिष्ट रसोई बनातीं तथा भाव पूर्वक भोजन करातीं। उनके हाथों से बनी रसोई की श्रीहरि बहुत प्रशंसा करते। महाराज उत्सव के लिए जहाँ भी जाते, गंगा माँ पहुँच जातीं और रसोई की सेवा करके श्रीहरि को प्रसन्न करतीं।

कई बार ऐसा भी होता था कि विचरण में में गंगा माँ श्रीहरि के पीछे पीछे एक टोकरी में रसोई का सामान तथा अँगीठी आदि लेकर चलतीं। जलती हुई अँगीठी सिर पर लेकर उस पर दाल, चावल अथवा सज़्जी की पतेलियाँ चढ़ा देतीं। मार्ग में जहाँ भी श्रीहरि विश्रान्ति के लिए ठहरते और स्नानादि विधि से निपटते, उतने समय में गंगा माँ भोजन तैयार कर देतीं तथा सुन्दर थाल सजाकर श्रीहरि को बड़े भाव से भोजन करातीं। ऐसी अनन्य सेवाभज़्ति से गंगा माँ ने श्रीहरि को अति प्रसन्न किया।

8. अखण्डानन्द स्वामी

भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा से भारत के विभिन्न प्रांतों में विचरण करते हुए संतों को हमेशा अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। एक बार अखण्डानन्द स्वामी विचरण करते हुए एक घने जंगल में जा पहुँचे। परन्तु ये ऐसे संत थे कि अपने नाम के अनुसार ही उनके गुण थे। भयंकर मुसीबतों में भी उनके चेहरे का आनन्द मंद होता। उनके मुख से 'स्वामिनारायण' मंत्र की धुन चालू ही रहती थी।

घने जंगल में प्रवेश करते ही उन्होंने देखा की एक भंयकर शेर आ

ठीक सामने से आ रहा हैं। स्वामी सोचने लगे, 'आज मेरे शरीर का अन्त निश्चित लगता है, शेर मेरा शिकार अवश्य करेगा। परन्तु कोई बात नहीं, किसी न किसी दिन इस नश्वर देह का नाश तो होना ही है, भगवान के धाम में किसी दिन तो पहुँचना ही है, तो आज ही ज़्यों नहीं। खुशी की बात है कि आज मेरा शरीर वाघ के काम में आ जाएगा। इस शरीर से किसी प्राणी को तृप्ति मिलेगी!

स्वामी निभर्य होकर आगे बढ़ते गये। उनके मन में लगातार यहीं विचरा चल रहा था कि 'मैं आत्मा हूँ। अमर हूँ। अभय हूँ। मुझे डर किसका? मेरा नाम ही अखण्डानन्द है। मेरा आनन्द अखण्ड है, उसे खण्डित कौन कर सकता है?' वे बिना विचलीत हुए शेर के सामने से गुजरने लगे। इतने निकट आये शिकार को भला शेर ज़्यों छोडेगा? शेर हुँकार करके पंजा उठाया और गर्जना करके छलांग लगाने की मूद्रा में आ गया। परन्तु भगवान तो हमेशा अपने भज़्त की चिन्ता रहा करती हैं। अखण्डानन्द स्वामी श्रीहरि के स्मरण के साथ अपनी जगह पर स्थिर हो गये। यकायक शेर के दिल में मानो परिवर्तन हो गया। वह सीधा धरती पर लोटने लगा, मानो स्वामी के चरणों की धूल अपनी शरीर पर चढा रहे

हो अथवा साष्टांग प्रणाम कर रहा हो! कुछ ही क्षणों में वह जंगल की घनी झाड़ियों में अदृश्य हो गया।

9. आरती

भगवान स्वामिनारायण नीलकंठ वर्णी के रूप में जूनागढ़ के निकट लोज गाँव में पधारे। यहाँ रामानंद स्वामी के आश्रम में उन्होंने अपनी पैदल यात्रा को समाप्त किया तथा आश्रम के मुख्य संत मुक्तानंद स्वामी की आज्ञा में रह कर रामानंद स्वामी की प्रतीक्षा करने लगे। उन्होंने रामानंद स्वामी से दीक्षा लेकर उनको गुरुपद पर स्थापित किया। कुछ समय के पश्चात् रामानन्द स्वामी ने संप्रदाय का उत्तरदायित्व को भगवान स्वामिनारायण को सौंपकर धाम में सिधार गए। आश्रम के मुख्य संत मुक्तानन्द स्वामी को श्रीजीमहाराज पर बहुत प्रेम था। वे उनको अपने गुरुभाई मानते थे। फिर भी रामानन्द स्वामी के देहावसान के कारण वे बहुत उदास रहते थे। उनको कहीं चैन नहीं पड़ता था। श्रीजीमहाराज ने सोचा कि मुक्तानन्द स्वामी को किसी तरह प्रसन्न रखना चाहिए, तथा उनके हृदय के जखम को भरना चाहिए।

एक दिन श्रीजीमहाराज कालवाणी गाँव में थे। प्रात:काल वे सन्तों को साथ नदी पर स्नान करने पधारे। मुक्तानन्द स्वामी नदी के किनारे पर पलाश के वन में शौचविधि के बाद वापस लौट रहे थे। अचानक उन्हें तेज़ की झलक में अपने गुरुदेव रामानन्द स्वामी के दर्शन हुए। मुक्तानंद स्वामी अचानक हुए इस दर्शन से गद्‌गदित हो गए।

रामानन्द स्वामी ने अत्यंत स्नेहभाव से पूछा, 'तुम इतने उदास क्यों हो? मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं तो केवल डुगडुगिया बजानेवाला हूँ, असली खेल खेलनेवाला तो बाद में आएगा? श्रीजीमहाराज ही असली खेल खेलनेवाले हैं, उन्हीं को इष्ट समझकर उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करो, इसीमें मेरी प्रसन्नता है।' मुक्तानन्दजी के सभी संशय समाप्त हुए। वे अत्यंत आनंदित होकर स्नान के लिए नदी के किनारे पर आए।

स्नान के बाद मन्दिर आकर उन्होंने अपने ही हाथों से पुष्पमाला बनाई। हाथ में आरती की सामग्री तथा पुष्पमाला लेकर वे श्रीजीमहाराज के

पास पधारे। उनका पूजन करके पुष्पमाला पहनाकर वे भावविभोर होकर कहने लगे, 'महाराज! आज आपकी सही पहचान हुई, मुझे रामानंद स्वामी ने आपकी यथार्थ महिमा समझाई है, अब तो आप ही मेरे इष्ट हैं।' इतना कहकर वे शीघ्र रचित आरती गाने लगे और घी का दीपक जलाकर प्रेमपूर्वक आरती उतारने लगे। आरती के शज़्द थे, 'जय सद्गुरु स्वामी।' हम आज भी उसी आरती का गान प्रतिदिन करते है। हमें मुज़्तानंद स्वामी रचित इस आरती को कंठस्थ कर लेना चाहिए।

जय सद्गुरु स्वामी, जय सद्गुरु स्वामी,
सहजानन्द दयालु (2), बलवंत बहुनामी.... जय॰
चरणसरोज तमारा वन्दूँ कर जोड़ी, प्रभु (2)
चरणे चिज़ धर्याथी (2), दुःख नाज़्यां तोड़ी.... जय॰
नारायण सुखदाता द्विजकुलतनुधारी, प्रभु (2)
पामर पतित उद्धार्या (2), अगणित नरनारी.... जय॰
नित नित नौतम लीला करता अविनाशी, प्रभु (2)
अडसठ तीरथ चरणे (2), कोटि गया काशी.... जय॰

पुरुषोज़म प्रगटनुं जे दर्शन करशे, प्रभु (2)
काल-करमथी छूटी (2), कुटुज़्ब सहित तरशे.... जय॰
आ अवसर करुणानिधि, करुणा बहु कीधी, प्रभु (2)
मुज़्तानन्द कहे मुज़्ति (2), सुगम करी सीधी.... जय॰

आरती गान के बाद हमें 'स्वामिनारायण' मंत्र की धुन करनी चाहिए, तत्पश्चात् पाँच साष्टांग दंडवत् प्रणाम करके निज़्न लिखित स्तुति करनी चाहिए :

आव्या अक्षरधामथी अवनिमां, अैश्वर्य मुज़्तो लई ।
शोभे अक्षर साथ सुंदर छबी, लावण्य तेजोमयी ॥
कर्ता दिव्य सदा रहे प्रगट जे, साकार सर्वोपरी ।
सहजानंद! कृपाळुने नमुं नमुं, सर्वावतारी हरि ॥ 1 ॥

जे छे अक्षरधाम दिव्य हरिनुं, मुज़्तो, हरि ज्यां वसे ।
माया पार करे अनंत जीवने, जे मोक्षनुं द्वार छे ॥
ब्रह्मांडो अणुतुल्य रोम दिसतां, सेवे परब्रह्मने ।
ए मूळाक्षर मूर्तिने नमुं सदा, गुणातीतानंदने ॥ 2 ॥

श्रीमन्निर्गुण-मूर्ति सुंदर तनु, जे ज्ञानवार्ता कथे ।
जे सर्वज्ञ, समस्त साधुगुण छे, माया थकी मुज़्त छे ॥
सर्वैश्वर्यथी पूर्ण, आश्रितजनोना दोष टाळे सदा ।
एवा प्रागजी भज़्तराज गुरुने प्रेमे नमुं सर्वदा ॥ 3 ॥

जेनुं नाम रट्या थकी मलिन संकल्पो समूळा गया ।
जेने शरण थया पछी भवतणा फेरा विरामी गया ॥
जेनुं गान दशो दिशे हरिजनो, गाये अति हर्षथी ।
एवा यज्ञपुरुषदास तमने, पाये नमुं प्रीतथी ॥ 4 ॥

वाणी अमृतथी भरी मधुसमी, संजीवनी लोकमां ।
दृष्टिमां भरी दिव्यता निरखता, सुदिव्य भज़्तो बधा ॥
हैये हेत भर्युं मीठुं जननी शुं, ने हास्य मुखे वस्युं ।
ते श्रीज्ञानजी योगीराज गुरुने, नित्ये नमुं भावशुं ॥ 5 ॥

शोभो साधुगुणे सदा सरळ ने, जज़्ते अनासज़्त छो ।
शास्त्रीजी गुरु योगीजी उभयनी कृपातणुं पात्र छो ॥
धारी धर्मधुरा समुद्र सरखा, गंभीर ज्ञाने ज छो ।
नारायणस्वरूपदास गुणीने, स्नेहे ज वंदुं अहो ॥6॥
ब्रह्मरूपे श्रीहरिनां चरणमां अनुरागीए ।
एवी ज आशिष दासभावे हस्त जोडी मागीए ॥

इस प्रकार प्रतिदिन मन्दिर में जाकर आरती तथा अष्टक का गान करना चाहिए। जिस गाँव में स्वामिनारायण मन्दिर की सुविधा न हो तो घर में भी घरमंदिर के सामने परिवार के सदस्य एकत्र होकर सुबह-शाम आरती-अष्टक का गान करें, जिससे हृदय में सात्विक प्रकाश तथा आनंद फैलता है।

10. वीर भगुजी

भगवान स्वामिनारायण के निजी सेवकों-पार्षदों में भगुजी नामक एक पार्षद थे। वे जितने सेवाभावी थे, उतने ही वीर थे। अपनी ज़मीन-जायदाद का त्याग करके वे श्रीहरि की सेवा में जुड़ गए थे। महाराज उनको भी उज़रदायित्व सौंपते, उस काम को वे बखुबी निभाते और श्रीहरि को प्रसन्न करते थे। देखने में तो वे वामन कद के थे, परंतु उनकी हिंमत लाजवाब थी। श्रीहरि ने उनको दादाखाचर के खेतों की सुरक्षा का काम सोपा था। ज़्योंकि उस समय चोर-लुटेरों के साथ साथ छोट-बडे ठाकुरो के आदमी आकर हरी फ़सल को नष्ट कर देते थे अथवा लूट लेते थे। परंतु जब भगुजी की वीरता का चमत्कार पाया था, वे लोग दादा खाचर के खेंतो की और नज़र डालना भूल गए थे। चाहे कैसा भी लूटेरा हो अथवा किसी ठाकुर सहाब का चहीता गुंडा, भगुजी का नाम सुनते ही वह नौ दो ग्यारह हो जाता था।

एक दिन भड़ली गाँव के ठाकुर भाण खाचर ने भगुजी का मस्तक का सौदा किया। और अपने दरबारियों के सामने ललकार दी कि, आप सभी में किसीकी हिंमत है जो भगुजी नाम के सिंह का मस्तक लाकर मेरे पैरों पर डाल सके। मैं भगुजी के मस्तक के नाम पर चाहे जितनी जमीन और नगद लूटाने तैयार हूँ। परंतु सिंह के साथ भिड़ने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ।

आखिर भगुजी का नाम तक नहीं सुननेवाले सिंध के योद्धा खबड़ और मतारा नाम के दो भाई लालचवश भगुजी को ललकारने के लिए तैयार हुए। वे अपने 200 सैनिकों के साथ दादा खाचर की जागीर की और रवाना हुए।

भगुजी को संदेश मिल गया था। उनका दोनों भाई से आमना सामना हुआ तब भगुजी ने निमंत्रण देते हुए खबड़ से पुकारा, 'अरे, ओ सिंधवा, मैं पहले तुझे वार करने का आह्वान करता हूँ। तब जाकर चखना मेरे प्रहार का मज़ा।' खबड़ ऐसा मौका ज़्यों गँवाता? उसने जम कर भगुजी के दाहिने कंधे पर तगड़ा वार किया। भगुजी जनोईवढ़ जज़्म के कारण पलभर के शिथिल हुए, परंतु उन्होंने अपनी छाती पर कसकर वस्त्र बाँध लिया और श्रीहरि के स्मरण के साथ उछलकर इतना तीव्र प्रहार किया किप पल भर में खबड़ का काम तमाम हो गया। खबल की करुण मौत अपनी ही आँखों से देखा तो मतारा अपने सैनिकों के साथ तुरंत भाग खड़ा हुआ। परंतु खेतों में हुई आपाआपी में अन्य पार्षदों के साथ भगुजी को अठारह जज़्म हुए थे।

भगुजी ने फिर एक बार दादा खाचर की जागीर की सुरक्षा की। परंतु

रज़्त के बहाव से वे इतने शिथील हो चूके थे कि उनके बचने की कोई आशा ही नहीं थी। श्रीजीमहाराज उनके कमरें में भगुजी के इलाज के लिए घंटों तक बैठ ते, पट्टी बंधवाते और औषध करवाते। उन्होंने सारे गाँव में हो रहे आरती, झालर तथा नगाड़े के घोष पर प्रतिबंध जाहिर किया ताकि आवेशवश कही भगुजी खड़े न हो जाए और उनके टाँके टूट न जाए।

परंतु एक दिन किसी के द्वारा दी गई लालच में आकर पट्टी बांधने वाले नाई की मति भ्रष्ट हुई। उसने भगुजी के घाव पर औषध तो लगाय पर साथ में पट्टी बांधने से पहले उसने कबूतर की विष्टा भर दी! अपने साथीयों के द्वारा झालर नगाड़े का घोष भी करवा दिया। भगुजी पीड़ा के मारा कराहने लगे तथा आवेश वश युद्ध में चलने की घोषणा करने लगे।

महाराज को यह खबर मिलते ही वे फौरन भगुजी के कमरें में आ पहूँचे। परिस्थिति देखकर पलभर में समझ गए कि यह काम किसीने बडे द्वेषपूर्वक किया है। उन्होंने तुरंत पट्टी खुलवा दी, फिर एक बार घाव साफ करवा दिए। जाँच-पड़ताल के बाद नाई पकड़ा गया। उसने कुबूल किया कि पैसे की लालच में मैं ने यह काम किया है।

श्रीहरि ने भगुजी की गंभीर स्थिति को देखकर सच्चिदानन्द स्वामी से कहा, 'आज से आपको इस कमरे की दहलीज पर बैठना होगा। यदि इनके प्राण लेने के लिये स्वयं यमराज भी आएँ तो उन्हें भगा देना तुज्हारा काम होगा। आपको किसी भी हालत में भगुजी को नवजीवन देना है।'

इस घटना के बाद कुछ ही दिनों में भगुजी स्वस्थ हो गये।

भावनगर के महाराजा विजयसिंहजी (वजेसिंह) ने भगुजी की वीरता की अनेक कहानी सुनी तो उन्होंने भगुजी को अपने सैन्य में भर्ती करनेके लिए निमंत्रण दिया। और कहा, 'आप सैन्य में भर्ती होंगे तो हम आपको मासिक तीन सौ रुपये देंगे तथा पाँचसौ घुड़सवारों के सरदार बनाएँगे।'

भगुजी ने उनको विनम्रतापूर्वक कहा था, 'महाराज, मुझे ऐसा कभी नहीं होगा, मैं तो भगवान स्वामिनारायण का सेवक हूँ। उन्ही की प्रसन्नता के लिए मैंने घर-संसार, ज़मीन-जायदाद आदि सब कुछ छोड़ दिया है, अब शेष जीवन उन्हीं की सेवा में बिताना है।'

यह सुनकर विजयसिंहजी ने उनका बार-बार धन्यवाद किया।

11. सामत पटेल

भगवान के सच्चे भज़्त हमेशा भगवान की इच्छा के अनुकूल ही बरतते हैं। उनके चरणों में अपना धन-धाम, जमीन-जागीर तथा तन-मन आदि न्यौछावर करने में भी वे लेश मात्र संकोच नहीं करते। ऐसे एक सच्चे भज़्त थे सौराष्ट्र के सामत पटेल।

थे तो वे अहीर जाति के भज़्त परंतु गाँव में अग्र स्थान पर होने के कारण पटेल कहलाते थे। वे श्रीहरि के अनन्य शिष्य थे। एक दिन वे श्रीहरि के दर्शन के लिए गढ़डा पहुँचे। महाराज मन्दिर का निर्माण करवा रहे थे। राजगीर मीस्त्रियों का वेतन चुकाना बाकी था। आर्थिक दुर्बलता के कारण दादा खाचर अथवा श्रीहरि पैसा नहीं दे पा रहे थे। इसीलिए आज सामत पटेल को देखते ही श्रीहरि ने इस बात का जिक्र किया।

वे तुरन्त नि:संकोच रूप दान देने के लिए तैयार हो गए और कहा, 'महाराज, कुछ देर के बाद आ रहा हूँ, मीस्त्रियों का काम हो जाएगा।'

सामत पटेल तुरन्त घर गए, घंटे-दो घंटे में तो उन्होंने अपनी सारी

जमीन-जायदाद, बैल, गाड़ी, भैंस आदि के सौदे कर दिए और सबकुछ बेचकर, साड़े चार हज़ार रुपये लेकर महाराज के पास आ पहुँचे। प्रणाम करते ही उन्होंने श्रीहरि के सामने रुपयों का ढ़ेर लगा दिया।

श्रीजीमहाराज भी आश्चर्यवत् पूछने लगे कि 'इतने सारे रुपये तुम कहाँ से लाये?' उन्होंने तुरंत कहा, 'महाराज! ये तो मेरे पास ही थे।' परंतु अन्तर्यामी श्रीहरि से कोई बात छिपी नहीं रह सकती। उन्होंने सामत पटेल की महिमा बढ़ाने के लिए आग्रहपूर्वक पूछा कि 'भगत, सच-सच बताओ, आप ये रुपये कहाँ से लाए?' सामत पटेल ने धीरे-धीरे सारी घटना सुना दी।

महाराज द्रवित होकर पूछने लगे, 'भगत! आपने सबकुछ बेच दिया, अब आप ज़्या खाओगे? बिना अनाज के आपके बच्चे भूखों मर जाएँगे, आपकी श्रद्धा है तो हम इनमें से एक हज़ार रुपय धर्मकार्य के लिए रखते हैं, बाकी रुपये आप वापस ले जाओ।'

'नहीं, महाराज! हमारी चिंता आप मत करें।' सामत पटेल ने कहा, 'हम अथवा हमारे बच्चे भूखे नहीं मरेंगे, अनाज तो उधार मिल सकता है और अगले साल कर्जा भर देंगे, परंतु आप को तो पूरी नगद स्वीकारनी होगी।' श्रीहरि इस भज़्त की श्रद्धा को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। ऐसे ही भज़्त के वश हो जाते हैं।

12. थाल (नैवेद्य स्तवन)

प्राणवायुं पानी और अनाज-जीने के लिए इन तीनों की विशेष आवश्यकता पड़ती हैं। बिना अन्न के हम जी नहीं सकते। अन्न पानी जमीन और किसान के परिश्रम से पैदा होता है। सूर्यनारायण के प्रकाश का हिस्सा भी अन्न पैदा करने में कम नहीं होता। ऐसे पौष्टिक अनाज से बनी रसोई हमारे शरीर को स्वस्थ रखती है तथा स्वस्थ शरीर हमें मानव सेवा तथा अध्यात्म साधना में सहयोगी होता है। इसिलीए अनाज का स्वच्छ होना तथा पवित्र होना अनिवार्य है। कंकड, मिट्टी साफ करना अनाज की स्वच्छता है और रसोई तैयार करके सर्व प्रथम भगवान का आभार मानते हुए उनके सामने नैवेद्य के रूप में रखना वह अनाज की पवित्रता हैं। इसिलीए हमें भोजन करने से पहले भगवान को अर्पण करना चाहिए।

वास्तव में तो विश्व की सभी चीज़ों के असली मालिक तो परमात्मा हैं। अत: किसी भी चीज़ का उपयोग करने से पहले हमें उसे भगवान को अर्पण करनी चाहिए। भगवान को अर्पण की हुई चीज़ 'प्रसाद' बन जाती है। भगवान ने हमें अन्न दिया है, तो उसे प्रसाद बनाकर ही उपयोग में लें। जो चीज़ें हमें खाने अधिक पसंद हों, उन चीज़ों से थाली सजाकर हम भगवान की मूर्ति के सामने रखें और परमहंसों के द्वारा रचे गए नैवेद्य स्तवन से प्रभु को निवेदन करें की वे हमारे भोजन स्वीकारने के लिए पधारे। सद्गुरु भूमानन्द स्वामी ने ऐसा ही सुंदर नैवेद्य स्तवन (थाल) रचा है। उस स्तवन की रचना के पीछे एक छोटी-सी कहानी है।

एकबार सद्गुरु भूमानन्द स्वामी गाँव-गाँव विचरण के लिए पधारे थे। परंतु पिछले चार दिनों तक उनको भिक्षा में अनाज का एक कण तक नहीं मिला। चार दिन के उपवास के बाद वे पाँचवें दिन एक गाँव के बाहर पेड़ के नीचे बिराजमान थे। उनके साथ रहनेवाले एक सन्त ने उनको गेहूँ का होला दिया।

अचानक इतना सादा सा भोजन मिल जाने पर वे भगवान की कृपा

मानकर गद्‌गद हो गए। उन्होंने गेहूँ के होले को पात्र में लेकर भगवान की मूर्ति को अर्पण किया। भीतर में भज़्तिभाव छलक ने लगा वे शीघ्र कवि थे, उनके मुख से सहज ही नैवेद्य स्तवन बहने लगा। जो इस प्रकार है :

जमो थाल जीवन जाऊँ वारी, धोऊँ करचरण करो त्यारी,
बेसो मेल्या बाजोठिया ढाली, कटोरा कंचननी थाली;
जळे भर्या चज़्बू चोखाली....जमो थाल ◦ 1
करी काठा घऊँनी पोली, मेली घृतसाकरमां बोळी,
काढ्यो रस केरीनो घोळी....जमो थाल ◦ 2
गळ्या साटा घेवर फूलवड़ी, दूधपाक मालपूआ कढ़ी,
पूरी पोची थई छे, घीमां चढ़ी....जमो थाल ◦ 3
अथाणां शाक सुन्दर भाजी, लाव्यो छुँ हुँ तरत करी ताजी,
दही भात, साकर छे झाझी....जमो थाल ◦ 4

इस स्तवन को यहाँ तक बोल कर उन्होंने ठाकुरजी को जलपान कराया और रचना पूर्ण की। जो इस प्रकार है :

चळुं करो लावुं जळझारी, एलची लविंग सोपारी,
पानबीड़ी बनावी सारी....जमो थाल ◦ 5
मुखवास मनगमता लइने, प्रसादीनो थाल मुने दइने,
बेसो सिंहासन राजी थइने....जमो थाल ◦ 6
कमरे कसीने रेंटो, राजेश्वर ओढ़ीने फेंटो,
भूमानन्दना वा'लाने भेटो....जमो थाल ◦ 7

स्वामी भूमानंदजी का भज़्तिभाव देखकर भगवान स्वामिनारायण उसी पल वहाँ प्रकट हुए। और थाल में निर्देश की गई सारी भोजन-सामग्री का थाल दिखाकर भोजन किया। तथा स्वामी को आशीर्वाद देकर अन्तर्धान हो गए।

हमें भी रसोई तैयार होने के बाद उसे थाल में सजा कर ठाकूरजी की मूर्ति के सामने रखना चाहिए तथा हज़ारों सत्संगी परिवारों की तरह उपरोज़्त स्तवन को प्रतिदिन भज़्तिभाव पूर्ण बोलना चाहिए।

जिस प्रकार चौथी पंज़्ति के बाद जलपान का प्रारंभ होता है उस समय स्तवन को रोककर, आँखें बन्द करके भगवान का स्मरण करना चाहिए की वे हमारी भोजन सामग्री को अंगीकार कर रहे हैं। तत्पश्चात

जलपान तथा मुखप्रक्षालन करके मुखवास अर्पण करने की मानसी भावना करनी चाहिए।

सत्संगीओं के घरों में आज उपरोज़्त स्तवन गाने की परंपरा 200 सालों से चली आ रही है। यदि हम भी परमहंसों की तरह पूर्णभज़्ति भाव से श्रीहरि को प्रत्यक्ष मानकर भोजन आदि अर्पण करेंगे तो वे स्वीकार भी करेंगे। यह निर्विवाद सत्य हैं ।

13. जोधो अहीर

गढ़पुर के ठाकुर साहब और भगवान स्वामिनारायण के भज़्त दादाखाचर की गोशाला में बहुत बड़ी संज़्या में गाय-भैंस आदि पशु थे। श्रीहरि ने उन पशुओं की देखभाल के लिए जोधा अहीर को नियुज़्त किया था। वह अत्यंत भोला और सेवाभावी भज़्त था। हालाँकि उसकी भाषा इतनी सजी-सँवारी हुई नहीं थी परंतु दिल का बड़ा नेक और संतों के प्रति अति विनम्र था। श्रीहरि के साथ सखा भाव रखने वाला जोधा भगवान की प्रसन्नता के बिना कोई अपेक्षा नहीं रखता था। उसे स्वादिष्ट चीज़ दिखाने पर वह कह देता, 'मुझे तो बस थोडी-सी छाछ और दो-चार रोट चाहिए। मेरा गुजारा हो जाएगा। भगवान के भज़्त को स्वाद से ज़्या लेना देना?' सभी उसकी सादगी पर प्रसन्न होते।

एक दिन श्रीहरि जोधा के गाँव पधारे। उसके गाँव का नाम था नानी बराई। वहाँ जोधा को भगवान का दर्शन हुआ और उसी दिन वह सारा परिवार, और अपनी विशाल गोशाला को छोड़कर श्रीहरि के साथ चल दिया तबसे वह दादाखाचर की गोशाला में सेवा करता तथा श्रीहरि को प्रसन्न करता।

एक दिन दादाखाचर के राजभुवन में उत्सव मनाया जा रहा था। खीर की रसोई तैयार हो रही थी। इस बेचारे को मालूम तक नहीं था कि, खीर कैसे बनती है। परंतु उबलते हुए दूध को देखकर वह तुरंत महाराज के पास पहुँच गया और कहने लगा, 'महाराज! ये जीवुबा, लाडुबा (दादाखाचर की बहनें) तो दूध को जला रही हैं, अरे भाई, दूध कोई जला देने की चीज़ है?'

श्रीहरि उसके भोलेपन को देखकर मुस्कुराने लगे और कहा, 'अब

तू ढोर-डंगर को लेकर खेतों में चला जा, जब दोपहर हो तब भोजन के लिए दरबार में आ जाना। आज तुझे यहीं पर भोजन करना है।'

परंतु जोधा तो अपने दूध को जला दिया गया यह सोचकर बड़ा गुस्से मे था वह बिना कुछ बोले पशु चराने निकल गया। परंतु भूख तो अपना काम करती ही है, जब वह खाने के लिए लौटा तो देखा कि सभी सन्त सिर पर अपना वस्त्र ओढ़कर ध्यान लगाकर मानसी पूजा कर रहे थे, परंतु जोधा को लगा ये सब सिर पर ओढ़ कर रो रहे हैं। उसने जोर से पुकार लगाई, 'अरे, महात्माओं, अब रोने से ज़्या होगा? मेरा सारा दूध जला दिया और तो सिर पर कपड़ा ड़ालकर रोएँगे नहीं तो और ज़्या करेंगे?'

श्रीहरिने उठकर उसे शान्त रहने के लिए समझाया और भोजन करने के लिए बिठा दिया। जब वे स्वयं स्वयं खीर लेकर आए तो वह शोर मचाकर कहने लगा, 'नहीं नहीं, महाराज! मुझे जला हुआ दूध नहीं चाहिए।'

महाराज ने कहा, 'अरे, जोधा तू खा तो सही! फिर कहना कि, जला हुआ दुध तुझे कैसा लगा?' श्रीहरि ने उसे आग्रह पूर्वक खीर पिलाइ। जोधा ने जब खीर खाई तो सारे शरीर में अनूठा एहसास पाकर वह झूम उठा। और दो-तीन मार मांग कर खीर पीने लगा। कितना भोला था... वह भज़्त!

वही कभी कभी शज़्कर, बादाम और केसर ड़ालकर गाय का ताज़ा दूध श्रीहरि को पिलाता। कभी कभी मज़्खन तथा मिसरी खिलाता। उसके प्रेमवश श्रीहरि भी स्वीकार कर लेते। कभी कभी जोधा दूध दुह रहा होता तब महाराज वहाँ से गुजरते तो वह गाय के आँचल से ही दूध की धारा उस तरह छोड़ता कि वह सीधी श्रीहरि के चरणों को भीगों देती। दूध से चरण धोकर जोधा अपनी भज़्ति अर्पण करता रहता। महाराज भी उस पर खूब प्रसन्न रहते।

कभी कभी महाराज स्वयं उसे दही मथने में उसकी सहायता करते तो कभी कभी उसका निकाला हुआ मज़्खन चुराकर खा लेते! जोधा महाराज की चोरी देख लेता तो महाराज मुस्कुराने लगते।

एक दिन महाराज ने कहा, 'जोधा, तू तो बेवकूफ ही रहा।'

जोधा ने तुरन्त उज़र दिया, 'आप बड़े बुद्धिमान हैं, है ना? एक चिड़िया के लिए आपने सारे ब्रह्मांड का सत्यानाश कर दिया, कहिये, ठीक है न!'

महाराज उसकी हाजिर जवाबी से प्रसन्न होते। एक दिन उसने महाराज से कहा, 'प्रभु! आप अगर बहुत बुद्धिमान है, तो मेरी बकरियों के इस झुण्ड में से कोयली, काटुडी और जांबुडी नाम की बकरियों को अलग कर दीजिए।' महाराज हँसने लगे।

तब मुज़्तानन्द स्वामी ने उलहना देते हुए जोधा से कहा, 'महाराज तो अन्तर्यामी हैं, वे सब कुछ जानते हैं।' उसी पल महाराज ने जोधा को समाधि लगवाकर अक्षरधाम का दर्शन करवाया। जहाँ वे दिव्यस्वरूप धारण करके बिराजमान थे। समाधि से जाग्रत होते ही जोधा प्रसन्न होकर महाराज के गुणगान गाने लगा।

जोधा की भज़्ति व्रज के गोप-गोवाल सी थी, शेर को भी भगाने की ताक़त रखनेवाला जोधा महाराज के आगे गाय-सा गरीब बनकर रहता तथा भज़्ति करता। देहातों के अनपढ़ और मोटी बुद्धि के लोग भी कितने भज़्तिभाव से भगवान का आदर करते थे इसका उदाहरण था जोधो अहिर।

14. सोढी गाँव की बीबी

भगवान की दया अपार है। यदि कोई भज़्तिभाव पूर्वक उनकी थोड़ी भी सेवा करता है, वे उसका उद्धार कर देते हैं। हिन्दू हो या मुसलमान, पारसी हो या ईसाई, स्त्री हो या पुरुष, किसी भी उम्र का हो अथवा जाति पाँति का, वे सभी का कल्याण करते हैं सभी का उत्कर्ष करते हैं।

गुजरात में एक इलाके को भाल प्रदेश कहते हैं। वहाँ सोढ़ी नाम का एक छोटासा गाँव है। दो सौ साल पहले उस गाँव में एक मुसलमान स्त्री रहती थी। उसने अपने आँगन में बबूल का पेड़ उगाया था। उसे बबूल का पेड़ इतना प्यारा था कि वह किसीको भी दातून के लिए एक सोटी तक नहीं देती थी और कहती थी, 'इस पेड़ को तो मैं ने केवल खुदा के लिए ही उगाया है।'

एक बार श्रीहरि विचरण करते हुए सोढी गाँव की सीमा पर पधारे। प्रात:काल हो चुका था। श्रीहरि गाँव के किनारे पर छोटे से तालाब में स्नान करने के लिए रुके।

उन्होंने दूर तक देख पर कहीं दातून के लिए वृक्ष या पौधा नहीं दिखाई दिया। इसीलिए उन्होंने सुराखाचर से कहा, 'आप गाँव में जाकर तलाश कीजिए, कहीं दातून की व्यवस्था हो सके तो लेकर आइए।'

सुराखाचर ने विनम्रभाव से कहा, 'महाराज! आप तो जानते हैं कि यह बहुत ही सूखा प्रदेश है, यहाँ दातून तो ज़्या घास का तिनका भी मिलना मुश्किल है।' परंतु महाराज ने फिर एक बार आदेश दिया तो सुराखाचर दातून की खोज में निकल पड़े। उन्होंने सोढ़ी गाँव में प्रवेश करते ही एक साधारण घर के आँगन में बबूल का पेड़ देखा। उन्होंने जाकर पूछा तो मालूम हुआ कि एक मुस्लिम स्त्री का घर है। उन्होंने उस स्त्री के पास जाकर प्रणाम करे के अपनी समस्या रखी, और बबूल के पेड़ से दातून की एक सोटी देने के लिए बिनंती की।

यह सुनकर वह स्त्री कहने लगी, 'तो तुज़्हे इस भालप्रदेश में बबूल का दातून चाहिए? वाह, एसा शौक़ीन इस प्रदेश में कहाँ से निकल आया?'

सुराखाचर ने बड़े धैर्यपूर्वक कहा, 'दातून मुझे नहीं परंतु हमारे

भगवान को चाहिए।'

यह सुनकर बीवी बोली, 'तो तुज्हारे भगवान तुज्हारे साथ आये हैं? यदि वे स्वयं खुदाताला होंगे, तो मैं खुद आकर दातून दूँगी तो मैं स्वयं दातून देने आऊँगी।'

सुराखाचर उसे लेकर श्रीहरि के पास आ पहुँचे।

बीवी ने अपने बबूल से काटी हुई दातून की छड़ी श्रीहरि के हाथों में अर्पण की। उसे श्रीहरि के दर्शन से ही प्रतीति हो चूकी थी कि, यह साक्षात् परब्रह्म परमात्मा है। उसने प्रार्थना करते हुए कहा, 'स्वामिनारायण महाराज! मुझ पर निगाह रखिएगा। और मेरे अन्तिम समय में आप खुद मेरा भला करने के लिए आइएगा।'

श्रीहरि ने उसकी बात स्वीकारते हुए आशीर्वाद दिया।

जब वह ज़ी अन्तिम साँस ले रही थी, तब भगवान स्वामिनारायण ने अपने हाथ में दातून लेकर दर्शन दिया और अपना वचन निभा कर उसका कल्याण किया। छोटी सी सेवा से भी भगवान प्रसन्न होकर कृपा बरसाते है और भगवान की कृपा भला ज़्या नहीं कर सकती?

15. अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी

गुजरात के जामनगर जिले का भादरा गाँव ऊँड नदी के किनारे बसा है। गाँव के चारों ओर लगे हुए आम, इमली, वट, पीपल, जामुन आदि पेड़ों से पूरा गाँव एक ऋषि के आश्रम के समान दिख रहा है।

उस गाँव में भोलानाथ शर्मा नामक एक पवित्र ब्राह्मण रहते थे। उनकी पत्नी का नाम था साकरबाई। दोनों में नाम के अनुसार ऐसे ही सद्‌गुण भी थे। स्वभाव के भोलानाथ और मिठीवाणी से सभी का हृदय जीतनेवाली साकरबाई अत्यंत धर्मिष्ठ प्रकृति के इन्सान थे। उनके गुरु का नाम था स्वामी आत्मानन्दजी। एकबार उन्होंने अपने गुरु से आशीर्वाद लिया कि, 'महाराज, हम निःसंतान है, यदि आप प्रसन्न हो तो हमें संतान प्राप्ति के आशीर्वाद दीजिए।'

उनकी भज़्ति से प्रसन्न होकर गुरुजी ने कहा था कि, 'आप चिंता मत करना, आपके घर स्वयं अक्षरब्रह्म पुत्र के रूप में प्रकट होंगे।' और वह दिन आ गया। संवत् 1841 (सन् 1785) में आश्विन शुज़्ला शरद पूर्णिमा के रात्री को भोलानाथ के घर पुत्रजन्म हुआ, आत्मानन्द स्वामी ने इस बालक का नाम 'मूलजी' रखा।

बचपन से ही मूलजी की चतुराई से हर कोई विस्मित होता था। इस बालक का भज़्तिभाव अनन्य था।

जब वे चार साल के हुए तब एक दिन उन्होंने अपनी माता से दूध माँगा। माताजी ने कहा, 'बेटा, अभी भगवान को अर्पण करके दूध देती हूँ।' परंतु मूलजी ने कटोरा उठा लिया और कहा, 'मैं पीऊँगा तो मेरे साथ-साथ भगवान भी पीएँगे।'

इतना कहकर उन्होंने कटोरा होठों से लगा लिया। माता को उसी पल अपने पुत्र में भगवान की मूर्ति का दर्शन होने लगा और दूध की महीन रेखा ठाकुरजी की मूर्ति होठो पर भी दिखने लगी। माता अत्यंत विस्मित हुईं।

किसी एक दिन सुबह उठते ही मूलजी कहने लगे, 'माँ, आज जनेऊ के गीत गाओ।' माँ ने कहा, 'ज़्यों? ऐसी ज़्या बात है?'

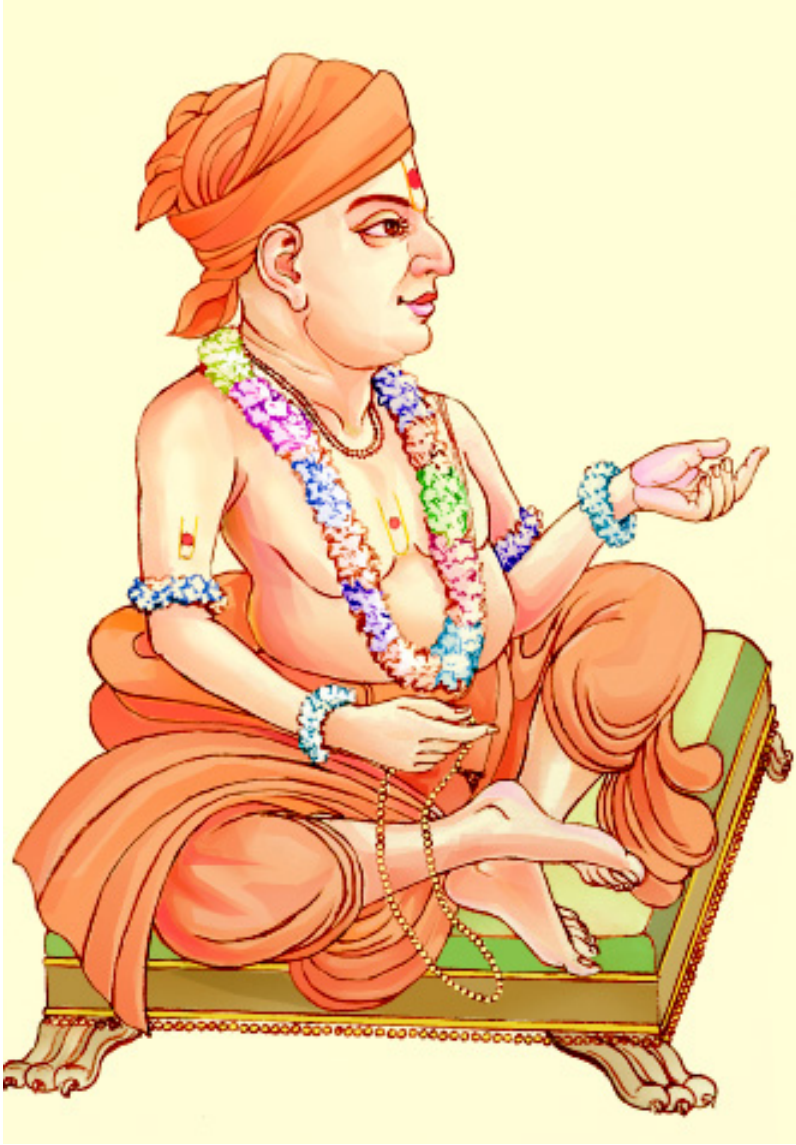

मूलजी ने कहा, 'माँ! अयोध्या में धर्मदेव के घर भगवान घनश्याम प्रकट हुए हैं, वहाँ आज उनको यज्ञोपवीत दी जा रही है। उनको बधाई देने के लिए आप जनेऊ के गीत गाओ; घनश्याम तो स्वयं प्रकट भगवान हैं।'

माता साकरबाई यह सुनकर चकित रह गई और पुत्र की इच्छा के अनुसार जनेऊ के गीत गाने लगीं।

माता कभी-कभी अपने छोटे बेटे सुन्दरजी को पालने में सुलाकर, मूलजी से कहतीं, 'जब तक मैं न आऊँ तुम सुंदरजी को झूलाते रहो।' मूलजी अपने छोटे भैया को झूलाते हुए उसके साथ बातें करने लगते और कहते 'माँ! हम दोनों भाई 'साधु' बनेंगे।'

माँ यह सुनकर बौखला जाती और ऐसा करने के लिए मना करती रहती। परंतु मूलजी का ज्ञान और वैराग्य कभी मंद नहीं होता था। जब वे आठ साल के हुए उनको यज्ञोपवीत गई। उस समय भी उन्हों ने अपने पण्डित को कहा था कि, 'मैं तो सब कुछ पढ़कर आया हूँ और मुझे तो पूरे विश्व को ब्रह्मज्ञान पढ़ाना है।'

वे हमेशा भगवान के स्मरण में लीन रहते। यह देखकर कभी कभी उनके पिताजी कहते कि 'अभी भगवान की साधना करने की इतनी ज़्या जल्दी है। तुम तो अभी बहुत छोटे हो। हँसो, खेलो, खाओ, पीओ और मौज़ करो।'

तब मूलजी कहते, 'पिताजी! हमारे शरीर का ज़्या ठिकाना जो आज है कल न हो! इसलिए भगवान का नाम तो बचपन से लेना चाहिए।'

एक दिन मूलजी ईख के खेत में काम कर रहे थे। वहाँ अचानक भगवान स्वामिनारायण ने उनको दर्शन देकर कहा, 'मूलजी! हम इस संसार में ज़्यों आए हैं? और हम यह ज़्या कर रहे हैं? विश्व में ब्रह्मतेज सूख गया है, अब निकल पड़ें।'

इतना सुनते ही मूलजी ने उसी पल हाथ से फावडा फैक दिया और घर-संसार को छोड़कर भगवान स्वामिनारायण की शरण में पहुँच गए। उस समय श्रीहरि गढ़पुर में बिराजमान थे।

कुछ समय के बाद संवत् 1866 (सन् 1810) में पौष शुज़्ला पूर्णिमा के दिन श्रीहरि ने गुजरात के खेडा जिले के डभाण गाँव में उन्हें दीक्षा देकर 'गुणातीतानन्द स्वामी' नामाभिधान किया।

स्वामीजी बहुत तपस्वी और सेवाशील थे। वृद्ध और बीमार साधुओं की सेवा करना उनको पसंद था। उनकी वाणी में वह जादू था कि, वे जो कुछ कहते, लोगों के हृदय से संसार की वासना नष्ट होने लगती। वे संसार संबंधी व्यर्थ बातें न तो कभी करते थे, न तो सुनते थे। वे हमेशा सभीको भगवान की महिमा सुनाते रहते थे। श्रीहरि की प्रत्येक आज्ञा का पालन वे बड़े भाव और उत्साह के साथ करते, इसीलिए श्रीहरि उन पर अत्यधिक प्रसन्न रहते।

एकबार श्रीहरि ने जूनागढ़ में एक विशाल मन्दिर का निर्माण कार्य संपन्न किया। उस समय उन्होंने सेवकों से कहा, 'भादरावाले गुणातीतानन्द स्वामी को बुलाइए।' जब स्वामी आ गए तब श्रीहरि ने अपने गले से फूलमाला निकाली और उनके गले में पहनाते हुए कहा, 'ये है हमारे जूनागढ़ के मंदिर के महन्त!' आज स्वामी की जूनागढ़ के महन्तपद पर नियुज़्ति हुई।

भगवान स्वामिनारायण ने अपने अंतिम दिनों में स्वामी को जूनागढ से अपने पास बुला लिया था। स्वामी प्रतिदिन 60 मील चलकर गढ़डा पहुँचे थे। श्रीहरि ने उनको जूनागढ के मंदिर के विषय में पुछताछ की और वहाँ के सिद्धेश्वर महादेव के लिए अपना मुकुट स्वामी के हाथों में रखा। आज अपने उज़म शिष्य के साथ मिलने से श्रीहरि के मुखारविंद पर परम संतोष झलक रहा था।

उन्होंने संप्रदाय के प्रत्येक संत एवं हरिभज़्तों को विशेष आदेश देते हुए कहा था कि, हमारे संतों-भज़्तों को प्रतिवर्ष एक महीने तक गुणातीतानन्द स्वामी से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए जूनागढ जाना, जो ऐसा करेगा उसकी सौ जन्मों की कसूर इस जन्म में दूर हो जाएगी। ऐसे आदेशों का तात्पर्य यह था कि, अब श्रीहरि अपने स्थान पर गुणातीत स्वामी को नियुज़्त कर रहे थे। श्रीहरि ने कुछ ही दिनों के बाद गढ़डा में ज्येष्ठ शुज़्ला दशमी को अपनी जीवनलीला समेट ली। उसी दिन से गुणातीतानंद स्वामी ने संप्रदाय की धूरा का उज़रदायित्व संभाल लिया।

वे अधिकतर जूनागढ़ रहते। वहाँ मन्दिर निर्माण के अधूरे काम पूर्ण किए। नई धर्मशाला का निर्माण किया। सेवा, सादगी, स्नेहभाव एवं साधुता

तो उनके आभूषण थे। मन्दिर के सभी काम वे स्वयं करते। खेती हो या गोशाला की देखभाल, संतों की सेवा हो या ठाकुरजी की महापूजा सर्वत्र सेवा करते हुए स्वामी ही सभी को दिखाई देते। भोजन में केवल रोटी, खिचड़ी, दाल, साग और छाछ के अलावा कुछ भी नहीं लेते। घी और मिष्ठान्न का त्याग हमेशा रखते। नंगे पाँव विचरण करना और तीनों ऋतुओं में ठण्डे जल से स्नान करना उनकी साधना का ही एक भाग था।

उन्होंने जूनागढ के नागरों को एवं मुसलमानों को भी भगवान स्वामिनारायण के आश्रित बनाये थे। हरिभज़्तों की समस्याओं को समझाना उनके दोषों को दूर करना तथा उनके हृदय में भगवान स्वामिनारायण की एक एवं अनन्य भज़्ति की स्थापना करना ही उनका जीवनकार्य था। गोपालानन्द स्वामी, वरताल-अहमदाबाद के आचार्य तथा अन्य उच्च कोटी के सन्त उनसे ब्रह्मज्ञान लेने के लिए जूनागढ़ आते थे।

उनके शिष्यों में बालमुकुन्ददासजी, योगेश्वरदासजी, रघुवीरजी महाराज, बिहारीलालजी महाराज, जागा भज़्त, भगतजी महाराज आदि मुज़्य थे। भगतजी महाराज, दर्जी परिवार के परम एकांतिक भज़्त थे तथा बी.ए.पी.एस. के स्थापक शास्त्रीजी महाराज के गुरु थे। गुणातीतानन्द स्वामी ने अपने ब्रह्मज्ञान की विरासत प्रागजी भज़्त अर्थात् भगतजी महाराज को दी थी। स्वामी के हृदय वेधक उपदेश का प्रेरक ग्रंथ आज 'स्वामी नी वातों' (गुजराती) के नाम से प्रसिद्ध है। जो हिन्दी में 'गुणातीतानंद स्वामी का उपदेशामृत' के नाम से आज ही उतना ही लाभकारी सिद्ध हो रहा है।

स्वामीजी चालीस साल तक जूनागढ़ के मंदिर में रहे। बाद में विचरण करते हुए वे गोंडल पधारे। वहाँ हरिभज़्तों के घर पधरावनी तथा कथावार्ता का लाभ देकर वे संवत् 1923 में (सन् 1867) आश्विन शुज़्ला द्वादशी के दिन रात को 12-45 बजे उन्होंने अपनी जीवनलीला समाप्त की। संत-हरिभज़्तों ने उनके शरीर का अग्निसंस्कार किया, वह स्थान आज 'अक्षरदेहरी' के नाम से विज़्यात है। उसी देहरी पर शास्त्रीजी महाराज ने विशाल मंदिर का निर्माण किया। जो आज 'अक्षर मन्दिर' के नाम से सुविज़्यात है।

16. स्वामी की बातें

गुणातीतानन्द स्वामी ध्यान तथा सेवा में, कथावार्ता करने में तथा आत्मविचार करने में सर्वदा अग्रसर रहे थे। परंतु एक दिन उन्होंने श्रीजीमहाराज से पूछा कि 'मुझे ज़्या करना चाहिए? मैं ध्यान करूँ, सेवा करूँ, आत्मविचार करूँ, या केवल बातें करता रहूँ?'

श्रीहरि ने प्रश्न सुनकर कहा था कि 'तुम चारों साधनाओं में अव्वल क्रम पर हो परंतु अब आप को केवल कथावार्त ही करनी है। ताकि लोगों को ब्रह्मज्ञान को बोध हो, तथा परमात्मा का निश्चय हो।'

उनकी आज्ञा के अनुसार वे हमेशा कथा करते रहते थे, सभीको ज्ञान देते रहते थे। उनकी भगवान सज़्बन्धी बातें इतनी सरल थी कि, अनपढ़ भी उसे समझ लेता और भगवान के आनंद को प्राप्त करता। उनके उपदेश वचनों की पंज़्तियों को आज भी कई मुमुक्षु कण्ठस्थ करते हैं।

उनकी केवल पाँच बातों को समझें तथा उन्हें कण्ठस्थ करें।

[1]

स्वामिनारायण हरे! स्वामीजी ने बात कही कि –

'आज 'स्वामिनारायण' नाम जितना अन्य कोई मंत्र बलवान नहीं है। इस मंत्र के जाप से काले नाग का विष भी नहीं चढ़ता और इस मंत्र से विषय भी नष्ट हो जाते हैं तथा जीव ब्रह्मरूप हो जाता है। काल-कर्म तथा माया के बन्धन भी छूट जाते हैं, यह मंत्र इतना बलवान है। इसलिए इस मन्त्र का निरन्तर भजन करना।'

इस बात पर कुछ विवरण देखें –

भगवान के नाम-स्मरण में अत्यंत ताक़त होती है। ज़्योंकि वह एक मंत्र है। मंत्र स्मरण विषैले साँप का विषभी उतर जाता है, यह बात हमारे गुरुदेव पूज्य योगीजी महाराज के जीवनप्रसंग से सिद्ध हो चुकी है।

जब गुजरात के राजकोट जिले के गोंडल शहर में मन्दिर का निर्माण हो रहा था, तब योगीजी महाराज तथा संतों का निवास एक झोपड़ी में हुआ करता था। वहाँ एक रात को योगीजी महाराज के बायें हाथ की पहली उँगली पर एक विषैले साँप ने डस लिया था। उनको बहुत पीड़ा होने

लगी। मोहन भगत ने शास्त्रीजी महाराज तक बात पहुँचाई। उन्होंने तुरन्त निर्णय दे दिया कि योगीजी महाराज को फौरन 'अक्षर देहरी' में ले चलो वहाँ भगवान के नामकी धुन का प्रारंभ करो।' सभी ने ऐसा ही किया। परन्तु गोंडल के महाराजा ने घटना सुनकर तुरन्त अपने निजी डाज़्टर को स्वामीजी के उपचार के लिये भेजा। परन्तु शास्त्रीजी महाराज ने नाम-स्मरण के सिवा अन्य औषध-उपचार करवाने से इन्कार कर दिया, और कहा 'स्वामिनारायण' महामंत्र की धुन से ही योगीराज ठीक हो जाएँगे।

इस प्रकार बारह घण्टों तक धुनगान चलता रहा। और योगीजी महाराज के शरीर में फैले हुए साँप के ज़हर का असर संपूर्ण मिट गया। परन्तु जिस उँगली पर साँप ने काटा था, वहाँ की हड्डी कुछ टेढ़ी हो गई थी, जो जीवनभर स्वामिनारायण मंत्र के प्रभाव को दिखानेवाले चिह्न के रूप में रह गई। कितना प्रभावी है 'स्वामिनारायण' नाम का महामंत्र! हमे भी इस मंत्र का जाप भज़्तिभाव पूर्वक करना चाहिए।

[2]

स्वामिनारायण हरे! स्वामीजी ने बात कही कि -

'यदि कोई भगवान का स्मरण करता रहे, तो उसकी सेवा मुझे करवानी है, उसके वस्त्र भी मुझे धुलवाने हैं तथा उन्हें बैठे ही बैठे भोजन भी मुझे देना है।'

भगवान की भज़्तवत्सलता कैसी हैं इस विषय पर स्वामीजी हमें उपदेश दे रहे है। वे कहते हैं कि भज़्ति करनेवाले भज़्त की सारी चिन्ता भगवान अपने सिर पर ले लेते हैं। दिन-रात भगवान का स्मरण करनेवाले भज़्त के खाने-पीने की अथवा पहनने-ओढने की सामग्री भगवान स्यवं पहुँचाते हैं! शर्त केवल यही हैं कि हमें भगवान पर पूरा भरोसा होना चाहिए।'

एक दिन गुणातीतानन्द स्वामी के शिष्य बालमुकुन्द स्वामी चलाला गाँव पधारे थे। उन्होंने कथा प्रसंग में उपरोज़्त बात कही; तब कुछ शिष्यों ने इस बात पर सवाल उठाया कि 'हम तो इस बात पर भरोसा नहीं करते हैं। ज़्या बिना रसोई किये केवल भजन करते रहने से हमें भोजन मिल जायेगा? ज़्या भगवान स्वयं रसोई तैयार करके हमें भेज देंगे? हम तो ऐसा नहीं मानते' बालमुकुन्द स्वामी ने सभी को मुस्काराते हुए कहा कि 'ठीक है, चलिए हम आज इस बात को प्रयोग के रूप में देखें। हमे बस केवल

उतना हीं करना है, जितना स्वामीजी ने अपनी बात में कहा है। आप सब विश्वास और भक्तिभावपूर्वक भजन करना आरंभ करें और देखें कि भगवान हमारे लिए भोजन की व्यवस्था करते हैं या नहीं!'

सभी ने मिलकर भजन करना आरंभ कर दिया। सुबह ग्यारह बज गये, साड़े ग्यारह का समय भी पार होने लगा। परन्तु भोजन का कही भी नामोनिशान दिखाई नहीं दे रहा था। कई संतों की श्रद्धा डगमगाने लगी, परन्तु बालमुकुन्द स्वामी ने विश्वास पूर्वक कहा, 'आप चिन्ता मत करे बस केवल भजन करते रहें। जो होगा ठीक ही होगा' ठीक बारह बजे एक हरिभक्त अचानक वहाँ पहुँचे। उन्होंने मिठाई और नमकीन स्वामीजी के सामने रखते हुए कहा, 'लीजिए स्वामीजी! यह नाश्ता का सामान आप सभी संतों और ठाकोरजी के लिए रखता हूँ। आप भगवान को अर्पण कर के नैवेद्य के बाद भोजन करना।'

स्वामीजी ने सन्तों से कहा, 'देखिए, साधुराम, भगवान ने अपना वादा निभा लिया। उठो और भगवान के लिए थाल सजाना शुरू करो' तब किसीने उस हरिभक्त से पूछा, 'आप यहाँ कैसे?' उन्होंने कहा, 'स्वामीजी! मैं अपने पुत्र की बारात लेकर अमरेली शहर जा रहा था। भोजन के समय

बैलगाड़ियाँ छोड़कर हमलोग पेड़ के नीचे भोजन की तैयारी कर रहे थे कि वहाँ से गुज़रते हुए उस गाँव के लोगों ने कहा कि 'बालमुकुन्द स्वामी संतों के साथ मन्दिर में बिराजमान हैं। तो हमने सोचा कि सन्तों को भोजन कराके ही हमें भोजन करना चाहिए। इस प्रकार में नाशता वगैरह लेकर यहाँ आ गया!' तब यह सुनकर सभी को विश्वास हो गया कि भजन करने वाली की चिन्ता भगवान हमेशा किया करते हैं।

[3]

स्वामिनारायण हरे! स्वामीजी ने बात शुरू की।

'करोड़ काम बिगाड़ कर भी एक मोक्ष सुधार लेना चाहिए और करोड़ काम सुधार लिए किन्तु एक मोक्ष बिगाड़ लिया तो इसमें ज़्या किया? (अर्थात् कुछ नहीं किया।)'

इस उपदेश पंज़्ति के विवरण में ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज एक छोटी-सी कहानी कहते थे: एक गाँव में एक पटेल रहते थे। वे एक दिन निकट के बड़े शहर से कुछ सामान खरीदने जा रहे थे। पटेल की पत्नी नें ने अनेक चीज़ खरीदने की एक लज़्बी सूचि उसके हाथ में थमा दी। ज़्योंकि पटेल थे ही बड़े भुलज़्कड़।

उन्होंने उस लज़्बीचौड़ी सूचि को जेब में रखी और बैलगाडी तैयार करने लगे। जब के काफी लोगों को इस बात की खबर मिली तो वे दौड़े हुए पटेल के घर आ पहुँचे। और सभी एक के बाद एक आकर अपने घर के लिए कुछ न कुछ खरीद लाने के लिए पटेल से निवेदन करने लगे।

पटेल ने सभी का निवेदन सुना तो और एक अच्छी खासी सूचि बना डाली। जब वे शहर में पहुँचे तो चीज़ें खरीदने के पहले उन्होंने सोचा कि दूसरों की चीज़ें पहले खरीद लूँ, अपनी चीज़ें बाद में खरीदूँगा। वे बाज़ार में निकले। वहाँ काफी हो-हल्ला था। सामान खरीदते खरीदते पटेल भी बैलगाड़ी भर गई। पटेल गाड़ी जोतकर अपने घर वापस लौट आए।

गाँव के लोग आकर अपना-अपना सामान ले गए, कुछ ही पलों में गाड़ी खाली हो गई। पटेल की पत्नीने पूछा, 'अजी, आप हमारा सामान नहीं लाए?' पटेल अपना सिर खुजलाते हुए बोले कि 'धत् तेरे की, वह तो मैं भूल ही गया!'

बताइए, इस पटेल को बाहोश कहेंगे या बेहोश?

जो अपना ही काम भूल गया और बेकार में शहर का चज़्कर काटा। हम बहुतों का बहुत काम भले ही करें, परन्तु दूसरों के साथ हम अपने कल्याण की कभी मत भूलें। दिनभर संसार व्यवहार की प्रवृज़ियाँ करते हुए हम आत्मकल्याण के लिए भगवान का नाम-स्मरण तक भूल जाएँ तब हम पटेल की तरह मूर्ख ही कहलायेंगे!

इसीलिए स्वामीजी कहते हैं कि करोड़ काम बिगड़ें तो भले ही बिगड़ें, परन्तु मोक्ष तो सुधारना ही चाहिए, कदाचित् करोड़ काम सुधर गए और मोक्ष का काम यदि बिगड़ गया तो समझ लो कि हमने कुछ भी नहीं किया।

मोक्ष का काम सुधारने के लिए हम भगवान का नाम लेते रहें। और भगवान के भज़्त बने रहें तो वे अवश्य हमारी रक्षा करेंगे।

[4]

स्वामिनारायण हरे! स्वामीजी ने बात कही कि–

'भगवान तो अपने भज़्त की रक्षा करने के लिए ही बैठे हैं। कैसे? जैसे पलक नेत्रों की रक्षा करते हैं, हाथ कण्ठ की रक्षा करते हैं, माता–पिता बच्चों की रक्षा करते हैं तथा राजा, प्रजा की रक्षा करते हैं, वैसे ही भगवान हमारी रक्षा करते हैं।'

प्रह्लाद, ध्रुव, नरसिंह मेहता, मीरांबाई आदि भज़्तों ने बड़े प्रेम भाव से भगवद् भजन किया तो भगवान ने उनकी रक्षा की। उसी प्रकार भगवान स्वामिनारायण भी अपने अनन्य भज़्तों की रक्षा करते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं।

'भड़ली' गाँव की यह बात हैं। वहाँ श्रीहरि के निष्ठावान भज़्त नाजा जोगीआ रहते थे। वहाँ चरवाहों ने इतना त्रास फैलाया कि नाजा भज़्त 'भोंयरा' (जिला: भावनगर) गाँव में आकर बस गए। यहाँ के ठाकुर वासुरखाचर विचित्र आदमी था।

एक दिन नाजा भज़्त ने उसे श्रीहरि की महिमा सुनाई तो वहाँ नाजा भज़्त से कहने लगा, 'यदि तुज़्हारे भगवान सच्चे हैं, तो उनको कल सुबह आकर मुझे दर्शन देना पड़ेगा। यदि वे नहीं आए तो मैं तुज़्हारे घूटने तूड़वा दूँगा।'

नाजा भज़्त ने ठाकुर के विषय में बहुत कुछ सुना था कि यह अत्यंत क्रूर और वहशी किस्म का आदमी है। वह किसी का मनने वाला नहीं था। इसी लिए नाजा भज़्त मन ही मन श्रीहरि का चिंतन करने लगे। श्रीजीमहाराज उस समय वीसनगर (जिला: महेसाणा) में बिराजमान थे। एक रात में श्रीहरि करीब दो सौ कि.मी. की दूरी पर कैसे आ पाएगें यह भी यह भी एक बड़ी समस्या थी।

परन्तु भगवान के लिए कभी कुछ भी असंभव नहीं होता। भज़्त की प्रार्थना सुनकर वे उसी दिन वीसनगर से निकल कर वढ़वाण आ पहुँचे

मार्ग में भोगावो नदी बाढ़ के कारण उफनती हुई गरज रही थी। महाराज बाढ़ की परवाह किए बिना नदी के पानी पर चलकर किसी तरह उस को पार कर लिया। और प्रात:काल होते ही भोंयरा गाँव में पहुँच गए! गाँव में प्रवेश करते ही उन्हें एक चारण से भेंट हुई। श्रीहरि ने उसके द्वारा ठाकुर वासुर खाचार को सन्देश भिजवाया कि 'नाजा के भगवान आ चूके हैं।'

श्रीहरि कुछ ही पलों में नाजा के घर आ पहुँचे। नाजा भज्त भगवान का दर्शन करते ही आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने बार-बार श्रीहरि के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। निश्चित समय पर श्रीहरि नाजा के साथ ठाकुर के राजभुवन में आ पहुँचे। राजभुवन में श्रीहरि को सैकड़ों पीडितों के कराहने की दर्दनाक आवाज़ें सुनाई दीं। वे करुणा से द्रवित हो गए। नाजा ने श्रीहरि को पहले से ही बता दिया था कि वासुरखाचर कितना बड़ा जुल्मगार है! और वह लोगों को कितनी छोटी-सी गलती हो जाने पर भी कैसा भयंकर दण्ड देता है और बेगुनाह लोगों की टाँगें तूडवाकर हमेशा के लिए अपाहिज कर देता है।

श्रीहरि ने वासुरखाचर की ओर ऐसा दृष्टिपात किया कि उसे तत्काल समाधि लग गई। समाधि में उसे नरक की यातनाओं का दर्शन

हुआ। यमराज और उनके दूतों ने वासुरखाचर की जमकर पिटाई की। मार खा-खाकर वह ढेर हो गया।

कुछ ही देर में जब महाराज की कृपा से वह समाधि से जाग्रत हुआ तो उठकर श्रीहरि के चरणों में गिर पड़ा, और गिड़गिडाकर अपने अपराधों की क्षमा माँगने लगा। वह अच्छी तरह समझ चुका था कि 'स्वामिनारायण तो साक्षात् भगवान ही हैं।' उस दिन से उसने प्रजा के प्रति अपना व्यवहार पूर्णत: बदल दिया। यह निर्दयी ठाकुर उस दिन से प्रजावत्सल होकर रहने लगा। श्रीहरि ने उसे वर्तमान दीक्षा देकर अपनी शरण में स्थान दिया। नाजा भज़्त की तो रक्षा तो हुई, परन्तु वासुरखाचर का भी उद्धार हो गया। श्रद्धा का असर कितना गहरा होता है!

[5]

स्वामिनारायण हरे! स्वामीजी ने बात कही कि -

'कितनों को मन खेल खिलाता है और कितने ही मन को खेल खिलाते हैं। यह बात नित्य ही सोचने जैसी है।'

साधकों के लिए उनका सबसे बड़ा शत्रु उनका अपना मन ही होता है। मन अपनी चंचलता के कारण हमें सेवा तथा भज़्ति में एकाग्र नहीं होने देता। परन्तु जो शूरवीर भज़्त होते हैं, वे तो मन का कहा नहीं करते और मन को भगवान की आज्ञा के अनुसार तथा भगवान की प्रसन्नता के लिए नचाता रहता है। जो लोग मन से खेलते हैं, वे मन के मालिक होते हैं। जो लोग मन का कहा करते हैं और उसी के अनुसार नाचते रहते हैं, वे मन के गुलाम होते हैं। हम यहाँ मन को जितनेवाले एक छोटे-से बाल भज़्त की कहानी सुनेंगे।

गढ़डा गाँव में एक कोली जाति का बालक था। उसके उसके पिता ने अपने खेत में खरबूजे बोए थे। उसे देखकर बालक ने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि जब खरबूजे पककर मीठे हो जाए, तब मैं सबसे पहले उसे लेकर स्वामिनारायण भगवान को अर्पण करूँगा।

जब फलों की फ़सल तैयार हो गई, तो एक मीठी सी महकवाला खरबूजा लेकर बालक भगवान को अर्पण करने के लिए निकल पड़ा। परन्तु उसका चंचल मन खरबूजे की महक से चंचल हो उठा। वह सोचने लगा कि 'इतना मधुर फल मैं स्वामिनारायण भगवान को ज़्यों अर्पण

करूँ? यह तो मुझे खुद ही खा जाना चाहिए।' परन्तु बालक ने मन की कही नहीं मानी। उसने मन को किसी तरह समझाया और आगे बढ़ा। कुछ आगे जाने पर फिर एक बार मन उछलने लगा कि 'भगवान के पास तो बड़े-बड़े लोगों की बड़ी-बड़ी चीज़ें उपहार के रूप में आती होगी। उन चीज़ों के आगे तेरे यह खरबूजे को कौन पूछेगा? इसलिए यह तो तुझे ही खा जाना चाहिए। शायद महाराज को मेरा यह फल पसंद न हो!' परंतु वह

फिर मन के साथ युद्ध खेलने लगा और कहने लगा, 'नहीं, नहीं, मैंने तो कहीं महीनों से इसे महाराज के चरणों में अर्पण करने का निर्णय लिया था। अब तो मुझे उन्हीं के चरणों में देना ही है। इस प्रकार वह बालक मन के साथ लड़ता झगड़ता आखिर मन को जीतकर दादाखाचर के दरबार भुवन में आ पहुँचा।

श्रीहरि ने बुलाकर उसे देखते ही निकट बुलाया और उसकी भेंट स्वीकार करके स्वयं अंगीकार किया। बाक़ी बचे प्रसाद को सभा में बाँट दिया। श्रीहरि इस लड़के पर अत्यंत प्रसन्न दिख रहे थे। उन्होंने कोठारी लाधा ठज़्कर से कहा, 'इस बच्चे को दस सेर शज़्कर का इनाम देकर भेजना।' लाधा ठज़्कर ने उस बच्चे को इनाम के रूप में शज़्कर दी और वह शज़्कर के साथ श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त करके खुश होकर अपने घर लौट गया।

उस समय सभा में एक बनिया बैठा था। उसने यह देखा तो उसकी तो आँखें ही फैल गई। वह गिनती करने लगा कि 'यहाँ यदि एक खरबूजे के बदले में दस सेर शज़्कर मिलती है, तो मैं एक गाड़ीभर के खरबूजे दूँ तो मुझे कितनी शज़्कर मिलेगी!'

वह दूसरे दिन गाड़ी भरकर खरबूजे ले आया और श्रीहरि से कहने लगा, 'लीजिए, महाराज आज तो मैं इतने सारे खरबूजे लाया हूँ।' महाराज ने तुरन्त कहा कि 'सेठजी! इन्हें नदी में डाल दो, मछलियों को अच्छा भोजन मिलेगा।'

'परंतु महाराज,' बनिया आहत होकर कहने लगा, 'आपने कल तो ऐसा नहीं किया था। उस बच्चे को तो आपने एक खरबूजे के बदले में दस सेर शज़्कर दी थी, मैं तो आज गाड़ी भरकर खरबूजे लाया हूँ, और आप इन्हें नदी में फैंकने को कह रहे हैं?'

'अरे पागल सेठजी!' महाराज ने कहा, 'मैंने उस बच्चे को खरबूजे के बदले में शज़्कर नहीं दी थी, वह तो घंटों तक अपने मन के साथ युद्ध करते हुए, मन को जीतकर मेरे पास लाया था। इसलिए शज़्कर तो मन पर विजय पाने का पुरस्कार था। और तुम? तुम तो शज़्कर के लोभी हो। तुज़्हारी दोनों की भावना में कितना अन्तर है!' वह बेचारा गाड़ी लेकर वहाँ से चलता बना।

यदि हम मन पर विजयी होकर साधना करते रहे, भजन करते रहे और बूरे काम करने के लिए प्रेरित करनेवाले मन को हिंमतपूर्वक पराजित कर सकें तो भगवान हम पर अत्यंत प्रसन्न होते हैं। इसीलिए स्वामी कहते हैं कि मन की बुरी बातें कभी मत सुनें।

17. शास्त्रीजी महाराज

भगवान स्वामिनारायण की गुणातीत संत परंपरा में गुणातीतानंद स्वामी तथा भगतजी महाराज के बाद तीसरा नाम आता है ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का। वे बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोज़म स्वामिनारायण संस्था (BAPA) के स्थापक थे।

गुजरात के खेड़ा जिले के छोटे से गाँव महेलाव में धोरीभाई पटेल का किसान परिवार रहता था। उनके घर संवत् 1921 (सन् 1865) की माघ शुज़्ला वसन्तपंचमी को माता हेतबाई की कोख से इस तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ। उनके बचपन का नाम था 'डुंगर भज़्त'।

डुंगर भज़्त बचपन से ही होशियार एवं शूरवीर थे। पढ़ाई में वे हमेशा अव्वल नंबर पर रहते। जब वे बच्चों के साथ खेलते तो एक ही खेल उन्हें आनंद देता, वह था मिट्टी के मन्दिर बनाना और उसमें भगवान की मूर्ति रखकर आरती-पूजा और भोग लगाकर भगवान का स्तवन करना। बचपन में निकट के तीर्थ वड़ताल के लक्ष्मीनारायण मंदिर में वे पैदल चले जाते और वहाँ संतों की सेवा करना, विद्वान संतों के द्वारा कथा-श्रवण करना, तथा ग्रंथों के टूटे हुए पन्नों को एकत्र करके बड़े पंडित की अदा से बैठकर उनका पाठ करना, डुंगर भज़्त के शौक के विषय थे।

सत्रह वर्ष की आयु में ही पिताजी से संमज़ि पाकर घर-संसार को छोड़ दिया था और भगवान स्वामिनारायण के समकालीन संत सद्गुरु विज्ञानानन्द स्वामी के पास सूरत में रहकर संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन शुरू किया। संवत् 1939 (सन् 1884) की कार्तिक शुज़्ला पंचमी के दिन आचार्य श्री विहारीलालजी महाराज ने उनको भागवती दीक्षा देकर 'यज्ञपुरुषदास' नामाभिधान किया। संस्कृत की पढ़ाई में वे वर्ग में प्रथम

क्रम पर रहते थे। आगे चलकर वे संस्कृत के ऐसे विद्वान हुए कि शास्त्रों पर होनेवाली चर्चा में वे बड़े-बड़े पंडितों को भी पराजित करते थे।

संस्कृत के विद्वान इस महान संत को लोग 'शास्त्रीजी' कहने लगे। पवित्रता और साधुता में भी वे बेज़ोड़ साबित हुए। हमेशा सनातन धर्म के वैदिक सिद्धांत का प्रचार-प्रसार करना उनका लक्ष्य रहा था। इसीलिए वे विरोधियों के द्वेषभाव को सहन करते हुए भी निर्भयतापूर्वक अक्षरपुरुषोज़म सिद्धांत का कीर्तिध्वज फहराते रहे।

उनकी प्रगति तथा प्रतिभा को देखकर कई साधुओं के दिल में उनके प्रति द्वेष की ज्वालाएँ भड़कने लगी। वे उनका बारबार अपमान करने लगे, कभी-कभी मौका पाने पर वे पीटाई भी कर देते अथवा हमेशा के लिए मौत की नींद सुलाने की साज़िश भी करने लगे। परंतु शास्त्रीजी महाराज के पक्ष में सत्य था और इसीलिए भगवान भी हमेशा उनकी रक्षा में रहते थे। विकट परिस्थितियों के कारण उन्होंने वड़ताल संस्थान को छोड़ना पड़ा और बोचासण गाँव में विशाल मंदिर का निर्माण करवाकर अक्षरपुरुषोज़म महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा की तब से वे 'बोचासणवाले' कहलाने लगे और शास्त्रीजी महाराज ने बीएपीएस का प्रारंभ इसी मंदिर के साथ सन् 1907 में किया।

इस मंदिर के उपरांत उन्होंने अटलादरा (जिला: बड़ौदा), सारंगपुर (जिला : अहमदाबाद), गढ़डा (जिला : भावनगर) और गोंडल (जिला : राजकोट) में निर्माण किया। उन्होंने सैकड़ों चोर, पापी और व्यसनी लोगों के जीवन का परिवर्तन किया। वैदिक सिद्धांत को माननेवाले सेवाभावी तथा समर्पित हरिभज़्तों का विराट समुदाय तैयार करके उन्होंने अपने युवा शिष्य स्वामी नारायणस्वरूपदासजी को बीएपीएस संस्था के प्रमुखपद पर नियुज़्त किया तथा अपने मुज़्य शिष्य योगीजी महाराज को धर्मधुरा सौंपकर उन्होंने सन् 1951 में अपनी जीवनलीला समेट ली।

वह दिन था। संवत् 2027 (सन् 1951) वैशाख शुज़्ला चतुर्थी का। उपासना के महान प्रवर्तक शास्त्रीजी महाराज के देहोत्सर्ग स्थान पर सारंगपुर में आज एक सुंन्दर स्मृति मंदिर का निर्माण किया है।

शास्त्रीजी महाराज के चरणों में कोटि कोटि वंदन।

18. घर और शाला में बर्ताव

हम भगवान स्वामिनारायण के सत्संगी हैं। अक्षरपुरुषोज़म स्वामिनारायण बालमण्डल के सदस्य हैं। लोग हमारे मस्तक पर तिलक और टीका देखते हैं तथा गले में पहनी हुई कंठी भी देखते हैं। वे हमें इसी कारण अच्छे और संस्कारी बालक समझते हैं। इसीलिए हमें भी अच्छे आचार के कारण लोगों का दिल जितना चाहिए।

उन्नत विचार, श्रेष्ठ आचार और मधुर व्यवहार सत्संगी बच्चों की एक मात्र शोभा है। इसीलिए हमारा पूरा वर्ताव अच्छा होना था। यदि हम झूठ बोलते रहें, साथी मित्रों के साथ झगड़ा-बहश करते रहे तो बड़े-बड़े लोग यहीं पूछेगे कि इस बच्चें को इसके मा-बाप ने कुछ अच्छा सिखाया है या नहीं? अथवा इसके माँ-बाप भी ऐसे ही बूरे होंगे जो बच्चा इतना उत्पात मचाता रहता है। लोग हमारी कंठी और तिलक-टीका आदि को देखकर हमारे गुरु के विषय में भी सोचने लगते हैं। और यदि हमने बुरा व्यवहार किया तो वह कहेंगे कि इसके गुरु ने इसे कुछ संस्कार दिया है या नहीं। इस प्रकार हमारे बूरे आचरण के कारण हमारे माता-पिता, गुरु तथा बालमंडल एवं बालमंडल के कार्यकर्ताओं का नाम बदनाम होता है। हमें इसीलिए तो आचार, विचार और व्यवहार को सुधारना ही पड़ेगा।

सत्संगी बालक का नित्यक्रम हमेशा इस प्रकार होना चाहिए :

सूर्योदय से पहले उठकर शौचस्नानादि के बाद हमें प्रतिदिन भगवान की पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात् हमारे माँ-बाप को चरणस्पर्श करना चाहिए। समय होते ही स्कुल की पढ़ाई और बाद में घर आकर हाथ-पैर मुँह धोकर भोजन, खेल-कूद तथा गृहकार्य की समाप्ति। संध्या के समय आरती और रात्रि भोजन के बाद घरसभा में बैठकर शास्त्रों की कहानियों का पठन एवं श्रवण। रात्रि को विश्राम के पहले भगवान का हृदयपूर्वक आभार मानकर अपनी दिन-भर में हुई गलतियों की सोचते हुए अगले दिन ऐसी गलती नहीं करने की प्रार्थना। यही है अच्छे बच्चों का नित्यक्रम।

कुछ बच्चे माता-पिता के साथ, बड़े भाई-बहनों के साथ, अपने

साथियों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करते हैं, वह ठीक नहीं है। बड़ों को हमेशा आदर देना चाहिए। भाई-बहनों के साथ आत्मीय व्यवहार करना चाहिए और साथियों को हमेशा सहयोग देना चाहिए। उनके साथ ऊँची आवाज़ में बोलना वास्तव में बहुत बड़ी बुराई है। बड़ों की आज्ञा का पालन हमारी शोभा है। उनके साथ नम्रता से पेश आईए और उनको उज़र देते हुए सज़्मानपूर्वक मधुर शज़्दों का प्रयोग करें।

खानेपीने के लिए, कपड़ों की पसंदीदा डिजाईन के लिए कुछ बच्चें माता-पिता के साथ जिद्द करते हैं : 'मुझे ऐसे ही कपड़े चाहिए, मुझे ऐसा ही खाना चाहिए। बिना इस्तरी के कपड़े में नहीं पहनूँगा, मुझे यही सज़्जी पसंद है। यदि वह नहीं मिली तो मैं खाना नहीं खाऊँगा।' ऐसे दुराग्रही बच्चे माता-पिता की प्रसन्नता कभी नहीं पाते। इसीलिए हमें दुराग्रह से परे उठकर भगवान की दया से जो कुछ भी मिले, संतोष रखकर निर्वाह कर लेना चाहिए। अच्छे बच्चे सादगी को ही शोभा समझते हैं।

हम तो भगवान स्वामिनारायण के शिष्य हैं। उनको बुरा व्यवहार कभी पसंद नहीं था। इसीलिए हमें भी माता-पिता की आर्थिक स्थिति को समझकर जो भी चीज़े मिले तथा जिस प्रकार की मिले इनको संतोषपूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए, परंतु हथाग्र के कारण माँ-बाप के दिल आहत होते हैं। यदि उनके पास कुछ मागना भी हो तो बहुत ही विनम्रता पूर्वक अपनी बात रखें ताकि उनका आदर बरकरार रहे।

हमारा घर तो मंदिर होना चाहिए। ज़्या भगवान की उपस्थिति में हम झगड़ा कर सकते हैं? तो हमारे घर में भी भगवान बिराजमान होते हैं। उनके सामने हमें अपने भाई-बहेनों के साथ झगड़ना नहीं चाहिए तथा ऐसा विवाद भी नहीं करना चाहिए कि मेरा भाई या मेरी बहन मेरा वह काम करेंगे तभी मैं उन लोगों का काम करूँगा। ज़्योंकि घर में एक-दूसरों के काम स्नेहभाव और सेवाभाव से किए जाते हैं।

कुछ बच्चे छोटी-छोटी चीज़ों के लिए अपने भाई अथवा बहन के साथ झगड़े पर तुल जाते हैं : 'वह पेन से लिखता है तो मैं पैन्सिल से ज़्यों लिखूँ?' 'वह सोता है तो मैं ज़्यों पढ़ूँ?' 'वह टी.वी. देखता है या वीड़ियों गेम खेलता है तो मैं ज़्यों न खेलूँ, चाहे भले ही मेरा होमवर्क बाक़ी हो।'

ऐसे विवाद सत्संगी बच्चे को कभी अच्छे नहीं लगते। वे तो भाई तथा बहन की तरज़्की से प्रसन्न रहते हैं और उनको कुछ अच्छी चीज़े मिल जाए तो खुश होते हैं। अपने परिवार के सदस्यों को प्रत्येक काम में संपूर्ण सहायता देते हैं, परंतु उन्हें परेशान कभी नहीं करते। तब एक-दूसरों को मारने-पीटने की तो बात ही कहाँ रही? सत्संगी बच्चे छोटे और बड़े सभी के साथ हिलमिलकर ही रहते हैं।

भगवान स्वामिनारायण कहते हैं कि हमें आय के अनुसार ही खर्च करना चाहिए। परंतु कुछ बच्चे जीद्द के कारण अपने माता-पिता से बार-बार पैसे माँगते रहते हैं। होटल का खाना, थियेटरों में फिल्म देखना, पार्टीयों में घूमने जाना, दूर तक बाईक की सवारी करके लौटना, पेट्रोल-डीजल का दूरुपयोग करना, दूसरे बच्चों को देखकर उन्हीं के समान चीज़ों का इस्तमाल करना, ऐसी-ऐसी बुरी आदतें हमें और हमारी परिवार को आर्थिकरूप से बर्बाद कर देती है। बाज़ारु चीज़ों को खाने से हमारा स्वास्थ्य बिगड़ता है। सिनेमा, पार्टी और ज़्लबों के कल्चर से हमारा मन भ्रष्ट होता है और ऐसे लड़के खर्च पूरा न होने के कारण चोरी या गुन्डा गर्दी की बुरी आदतों के शिकार हो जाते हैं और घर से ही पैसे चुरा लेते हैं। इसलीए हमें हमेशा अच्छे लड़कों की संगत करनी चाहिए। बुरों की मित्रता हमें बुराइयों की ओर ही खींचती है।

बाजारु चीज़ों से न केवल स्वास्थ्य ही बिगड़ता है, हमारे संस्कार भी दूषित होते हैं। सत्संगी बच्चे सिनेमा कभी नहीं देखते। बुरी फिल्मों के कारण हमारे आचार-विचार नष्ट-भ्रष्ट होते हैं । सत्संगी बच्चे कहीं भी चोरी नहीं करते, परंतु आवश्यकता पड़ने पर माता-पिता से वे पैसे माँगते हैं, लेकिन चोरी तो वे किसी भी हालत में नहीं करते। सत्संगी बच्चे हमेशा अच्छे लड़कों से मित्रता करते हैं । झूठ बोलनेवाले, चोरी करनेवाले आवारा लड़कों से वे हमेशा दूर ही रहते हैं, उनकी दोस्ती कभी नहीं करते।

सदाचारी तथा सत्संगी बच्चों की प्रशंसा हमेशा होती रहती हैं। उनसे सभी लोग बहुत स्नेह रखते हैं और लोगों के दिल में उनके माता-पिता तथा गुरु का सज़्मान भी बढ़ता है। इसीलिए आज से ही हम ईमानदारी पूर्वक प्रतिज्ञा करें कि :

1. हम चोरी कभी नहीं करेंगे।
2. झूठ कभी नहीं बोलेंगे।
3. बाजारु खाद्य-सामग्री कभी नहीं खाएँगे।
4. माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करेंगे।
5. किसी बात का दुराग्रह कभी नहीं करेंगे।
6. छोटे भाई-बहनों के साथ झगड़ा कभी नहीं करेंगे।
7. बुरे लड़कों के साथ मित्रता कभी नहीं रखेंगे।
8. बिना छाने पानी या दूध का उपयोग कभी नहीं करेंगे।
9. कोई भी अनुचित काम कभी नहीं करेंगे।

परंतु

1. हम हमेशा सच बोलेंगे।
2. हमेशा बुरी आदतों से दूर ही रहेंगे।
3. माता-पिता के साथ विनम्रतापूर्वक व्यवहार करेंगे।
4. हमेशा पूजा, ध्यान, आरती आदि करेंगे।
5. हमेशा मस्तक पर चन्दन एवं कुंकुम का तिलक-टीका लगाएँगे।
6. हमेशा पढ़ने-लिखने में एकाग्रतापूर्वक ध्यान देंगे।
7. हम मन्दिर दर्शन तथा बालमण्डल की सभा में हमेशा जाएँगे।
8. तथा गुरु तथा माता-पिता की आज्ञा का पालन हमेशा करेंगे।

19. पूजा डोडिया

गुजरात के भावनगर जिले में एक छोटा-सा गाँव है। गाँव का नाम हैं पाणवी। इस गाँव में अधिकतर राजपूत कौम के लोग रहते थे। वहाँ इसी कौम के एक हरिभज़्त थे। उनका नाम था पूजा डोडिया। सत्संगी होने से पहले ही उन्होंने संकल्प किया था कि यदि मुझे इस जन्म में भगवान की प्राप्ति न हुई तो मैं शरीर-त्याग करके आत्महत्या कर लूँगा।

एक दिन वे भगवान के न मिलने पर निराश होकर जूनागढ़ जिले के गोपनाथ महादेव के मन्दिर में जा पहुँचे। यह तीर्थ समुद्र के किनारे पर विद्यमान है। पूजाभाई शिव दर्शन के बाद समुद्र में आत्महत्या के लिए ही

जा रहे थे कि अचानक आकाश से देववाणी हुई कि तू ज़्यों मरता है? जा, घर लौट जा, आज कलयुग में भगवान स्वामिनारायण प्रकट हो चुके हैं, उनके सन्त तुज़्हारे घर स्वयं ही आएँगे। तुज़्हें मरने की आवश्यकता नहीं है। पूजाभाई यह सुनकर प्रफुल्लित हृदय से घर आ पहुँचे।

कुछ महिनों के बाद वे एक दिन हल जोतकर अपने खेत से घर की ओर आ रहे थे कि रास्ते में भगवान स्वामिनारायण के दो परमहंसों के दर्शन हो गया। एक थे कृपानन्द स्वामी और दूसरे थे गुणातीतानन्द स्वामी। सन्तों को देखकर पूजाभाई का हृदय पुलकित हो उठा। वे दौड़ते संतों के चरणों में दंडवत् प्रणाम करने लगे।

संतों ने पूजाभाई का परिचय पूछा और आशीर्वाद दिया तब पूजाभाई कहने लगे, 'स्वामीजी, मुझे इस जन्म में भगवान का दर्शन करवा दो।' सन्तों ने उनको भगवान स्वामिनारायण के विषय में बहुत कुछ मार्गदर्शन दिया। पूजाभाई संतों को लेकर अपने घर आ पहुँचे। बड़े स्नेहभाव से उन्होंने संतों को भोजन करवाया। आज से वर्तमान धारण करके पूजाभाई स्वामिनारायण भगवान के आश्रित हुए।

वे सत्संग के रंग में इस कदर रंग गए कि दिन-रात सत्संगमय बिताने लगे। उनकी विवाहिता पुत्री को भी पिता की ऐसी लगन देखकर संसार से वितराग होने लगा और वह संसार को छोड़कर लाडुबाई, जीवुबाई के पास जाकर सांज़्ययोगिनी बनकर रहने लगी। पूजाभाई ने अब अपने जमाई को भी समझाया कि इस शरीर का लाभ केवल यही है कि इस जन्म में भगवान को प्रसन्न करके ब्रह्मस्थिति प्राप्त करना। ऐसा उपदेश सुनकर वह भी श्रीहरि के चरणों में आकर त्यागी बनकर रह गया!

कारियाणी के ठाकुर वस्ता खाचर पूँजा भज़्त के मित्र थे। एक दिन पूजा भज़्त ने उनसे कहा, 'जब भी श्रीहरि आपके घर पधारे तो आप मुझे तुरन्त सूचित करना।' मुझे उनके दर्शन की बड़ी अभिलाषा है।

एक दिन वस्त्रा खाचर ने गंगाराम दवे के द्वारा पूजाभाई को सूचित किया कि भगवान स्वामिनारायण हमारे गाँव पधारे हैं। यह सुनकर पूजाभाई खेत में हल चला रहे थे, उसे वैसे ही छोड़कर कारियाणी आ पहुँचे। परंतु वहाँ पहुँचते ही उनको पता चला कि 'महाराज तो अभी अभी सारंगपुर के

लिए निकल चूके हैं। यह सुनते ही पूजाभाई भूख-प्यास की पवाह किए बिना सारंगपुर की ओर चल दिए।

महाराज मार्ग में सजेली-वजेली गाँवों के बीच एक विशाल वृक्ष के नीचे विश्राम ले रहे थे। अचानक वे अपने सेवक नाजा जोगिया से कहने लगे 'नाजा, आज तो बहुत प्यास लगी है।' नाजा जोगिया ने कई बार पानी श्रीहरि को पानी पिलाया, परंतु महाराज की प्यास बुझी नहीं।

नाजा जोगिया भी यह देखकर विस्मित थे। कुछ समय के बाद अचानक श्रीहरि उस पेड़ पर चढ़ गए। उन्होंने देखा कि दौड़ते-भागते पूजा भज़्त अपनी ओर आ रहे थे। महाराज फौरन पेड़ से उतरकर पानी का पात्र लेकर पूजा भज़्त के स्वागत के लिए दौड़े। भगवान और भज़्त का यह स्नेहपूर्ण मिलन था। स्वयं भगवान ने अपने प्यासे भज़्त को तृप्त किया। दोनों पेड़ के नीचे आकर बिराजमान हुए। अब उन्होंने नाजा भज़्त से कहा, 'नाजा! अब मेरी प्यास बुझी।'

पूजा भज़्त श्रीजीमहाराज के साथ-साथ उनकी माणकी घोड़ी की भी उतनी ही महिमा समझते थे। वे जितने प्यार से श्रीहरि को चाहते थे, उतने ही प्यार से वे उनकी घोड़ी की भी सेवा करते थे। वे समझते थे कि इस माणकी घोड़ी साक्षात् भगवान को लेकर घर-घर पहुँचती हैं। वह कितनी भाग्यशाली है!! भगवान के सज़्बन्ध से वह भी मोक्ष की अधिकारी बन गई हैं, उसको ज़्या बुरा खिलाया जा सकता है? ऐसा समझकर वे उसके लिए ऐसी हरी घास काटकर लाते थे कि उसमें थोड़ासा भी कूड़ा-कचरा न हो, अथवा न तो कोई कंकड़ या कांटा हो। स्वच्छ घास देकर वे माणकी घोड़ी की सेवा करते थे।

एक दिन वे अपनी बैलगाड़ी में हरी घास भरकर गढ़डा ला रहे थे कि उसी दिन गढ़पुर में श्रीहरि ने अपनी जीवन लीला समेट ली थी। उनकी अन्त्येष्टि विधि का सामान लेने के लिए भगुजी और रतनजी पूजा डोडिया को गढ़डा की सीमा पर ही मिल गए। भगुजी ने सहज ही पूछ लिया, 'पूजाभाई! कहाँ जा रहे हैं?' पूजाभाई ने कहा कि 'भाई भगुजी, मैं तो माणकी के लिए लक्ष्मीवाड़ी में घास देने जा रहा हूँ। महाराज के दर्शन करके लौटूँगा।'

भगुजी की आँखें भर गईं। इस प्रेमी भज़्त के भज़्तिभाव को देखकर वे उदास मन से बोल उठे, 'पूजाभाई! अब आप श्रीहरि का दर्शन कैसे कर पाओगे? माणकी के सवार श्रीजीमहाराज तो स्वधाम सिधार गए हैं।'

अचानक मिली इस खबर को पूजाभाई किसी तरह सहन नहीं कर पाए। वे आघात के कारण बैलगाड़ी पर रहे घास के ढेर से सीधे भूमि पर गिर गए।

लगभग तीन घंटे के बाद जब वे होश में आये तो लगा कि उनके प्राण कण्ठ तक आ गए हैं। अब श्रीहरि के बिना प्राण को टिकाना कठिन होगा। वे चाहने पर भी एक कौर अन्न अथवा एक बूंदभर जल नहीं ले पा रहे थे। गढ़डा आकर उन्होंने गोपालानन्द स्वामी चरणों में गिरकर हृदय विदारक आक्रंद किया। स्वामी ने भी उनको बार-बार समझाया, सांत्वन दिया और अन्न, जल लेने के लिए निर्देश भी किया। परंतु वे गद्‌गद भाव से कहने लगे, 'स्वामी, अब तो अन्न, जल गले के नीचे उतारना असंभव है।'

स्वामीजी बार-बार समझाते रहे कि वे अन्न-जल का त्याग न करें; तब पूजाभाई ने शपथ लेकर कहा, 'स्वामी, मैं यहाँ जानबूझ कर नहीं कर रहा हूँ। हमारे परमहंसों की सौंगध लेकर कहता हूँ कि अन्नजल मेरे गले के नीचे उतरता ही नहीं! यदि श्रीजीमहाराज की इच्छा से ही मुझे ऐसा हुआ होगा तो वे मुझे अपने त्रयोदशाह श्राद्ध के दिन आज से तेरह दिन के बाद अपने अक्षरधाम में ले जाएँगे।'

और ऐसा ही हुआ। बिना अन्नजल के पूजाभाई के बारह दिन बीत गए। वे इतने दिन युवा सेवक की भाँति सेवा करते रहें। तेरहवें दिन दोपहर को संतों-भज़्तों की उपस्थिति में उन्होंने सभी को 'जय स्वामिनारायण' कहते हुए अपना शरीर छोड़ दिया। श्रीजीमहाराज उनको लेने के लिए स्वयं पधारे थे ऐसा दर्शन सभी को हुआ।

ऐसे अनन्य भज़्त थे - पूजा डोडिया।

20. नाथ भक्त

बड़ौदा शहर में एक साधारण स्थिति के सत्संगी रहते थे। उनका नाम नाथभज़्त था। वे श्रीजीमहाराज के परम भज़्त थे। श्रीहरि भी उनकी भज़्ति एवं सेवाभावना की बहुत प्रशंसा करते थे। उनका काम तो बहुत साधारण था, बड़ौदा के बाजार में सज़्जी बेचने का उनका छोटा-सा कारोबार किया करते। और जब भी थोड़े रुपए इकट्ठे हो जाते, वे बाजार में जाकर बेश कीमती वस्त्र परिधान ले आते और गढ़पुर जाकर श्रीहरि के चरणों में अर्पण कर देते।

कभी-कभी अपनी कमाई का एक-एक रुपया इकट्ठा होने पर वे

संतों के लिए ब्रह्मभोज का आयोजन कर देते। श्रीहरि और संतों की अपार महिमा समझनेवाले नाथ भज़्त की सेवा और भज़्ति से हमेशा प्रसन्न रहते।

एकबार वे ऐसे ही ब्रह्मभोज की सेवा के लिए रुपये लेकर गढ़पुर पधारे थे। संतों को घेवर की रसोई खिलाकर श्रीहरि का पूजन करके बड़ौदा जाने के लिए बिदा ली। उनके जाते ही श्रीहरि ने किसी काम के सिलसिले में उनको याद किया और एक सेवक से कहा, 'जाकर जरा नाथभज़्त को बुला लाओ।'

वह नाथभज़्त को बुलाने के लिए गुजरात की ओर जाती हुई सड़क पर बड़ी दूर तक दौड़ता रहा पर नाथभज़्त कहीं नहीं मिले। आखिर उसने करीबन 160 किलोमीटर दूर बड़ौदा शहर के पास विश्वामित्री नदी के किनारे पर नाथभज़्त को पकड़ ही लिया, और महाराज का आदेश सुनाया। नाथभज़्त ने उसी पल गढ़डा का रुख ले लिया। वे बिल्कुल अपने घर के निकट पहुँच चुके थे परंतु न घर गए, न घर पर कोई संदेशा भेजा। जब वे गढ़पुर आए और श्रीहरि को पूरी बात का पता चला तो वे नाथभज़्त अति प्रसन्न हुए। साथ-साथ उस आज्ञापालक सेवक को भी आशीर्वाद दिया। आज्ञापालन में वे कभी मन-मानी नहीं करते थे।

जब नाथभज़्त की पत्नी मृत्युशय्या पर थीं, श्रीहरि उनको अपने धाम में ले जाने के लिए आए, दिव्यरूप धारण करके पधारे थे। उपस्थित पूरे परिवार जनों को महाराज का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ था। पत्नी के मृत्यु के बाद इस सांज़्यनिष्ठ हरिभज़्त ने तनिक भी शोक नहीं किया।

उनके पुत्र का नाम प्रभुदास था, उसे श्रीहरि की कृपा से हमेशा समाधि लगती थी। समाधि में वह श्रीहरि के पास जाकर प्रसादी के रूप में मेवा-मिठाई अथवा फूल या शज़्कर आदि ले आता। वह भी केवल सोलह साल की युवा उम्र में चल बसा तो नाथभज़्त ने सारे मुहल्ले में शज़्कर बाँटी।

लोग सोचने लगे कि 'नाथ भज़्त पागल हो गए हैं। यह ज़्या मीठाई या शज़्कर बाटने का अवसर है?'

जब नाथ भज़्त ने यह सुना तो उन्होंने कहा, 'मेरे पुत्र का नाम ही प्रभुदास था। वह प्रभु का दिया हुआ था और प्रभु के पास बैठ गया है। जिसका था उन्होंने बुला लिया। अब वह प्रभु के धाम में ही बैठ गया है,

इससे अधिक खुशी का प्रसंग ज़्या हो सकता है! लोग इस सज़्जीवाले नाथभज़्त की आध्यात्मिक समझ देखकर दिग्मूढ़ रह जाते।

श्रीहरि उनको कई बार उनकी प्रशंसा भी करते और सबको कहते कि आप सभी को नाथभज़्त के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके समान भज़्त बनना है।

21. बालमण्डल की सभा में बर्ताव

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने जन्म घुट्टी से ही बच्चों को अध्यात्म के संस्कार मिलते रहे इसी उद्देश्य से बालमण्डलों की स्थापना की थी। हमें भी बचपन से ही संस्कार देने के लिए सत्संग की दृढ़ता बढ़ाने के लिए तथा गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए बालमण्डल में जाना चाहिए।

जिस प्रकार शरीर को पोषण प्राप्त हो उसके लिए हम अनाज लेते हैं, शरीर को स्वच्छ रखने के लिए हम स्नान करते हैं तथा शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हम व्यायाम करते हैं। उसी प्रकार ज़्या हमने मन के पोषण के लिए तथा उसको स्वच्छ रखने के लिए कुछ आयोजन किया है। यदि नहीं किया तो मन की शुद्धि के लिए हमें ज़्या करना चाहिए?

हमें इसके लिए मन को अच्छे विचारों का भोजन देना चाहिए। तथा उसे स्वच्छ और स्वस्थ रखने के लिए हमेशा बालमंडलों की सभा में जाना चाहिए। प्रत्येक सप्ताह में एकबार होनेवाली बालसभा में हम नियमित रूप से जाएँगे तो हमारे विचार शुद्ध होंगे। हमारी बुरी आदतें छूट जाएगी। हमारा आचार पवित्र होगा। हमारे संस्कार तथा विचार सुदृढ़ और स्वच्छ होंगे। विचारों के पवित्र होने से हमारा आचार भी शुद्ध हो जाता है।

बालसभा में अपने सत्संगी बालमित्रों के साथ, कैसा बर्ताव करें, यह हमें अच्छी तरह जान लेना चाहिए।

बालसभा में प्रवेश करने से पहले हमें मन्दिर में जाकर भगवान को दण्डवत् प्रणाम करना चाहिए। उसके बाद समस्त सन्तों को चरणस्पर्श करके प्रणाम करना चाहिए। तत्पश्चात् बालसभा के खंड में हमारे संचालक के सूचन अनुसार आसन ग्रहण करना चाहिए। बालसभा स्वयं एक पवित्र

आयोजन है। उसमें बैठकर हमें न तो किसीकी मज़ाक उड़ाना चाहिए, न तो किसी के साथ लड़ना-झगड़ना चाहिए। ज़्योंकि ऐसा करना बहुत बुरी आदत है। अच्छे घर के, संस्कारी और सत्संगी माता-पिता के बच्चे ऐसा कभी नहीं करते।

कुछ बालक सभा के दौरान अन्य साथी बच्चों के साथ हँसी-दिल्लगी करते हैं, झगड़ते हैं, व्यर्थ उधम मचाते हैं, सभा के कार्यक्रमों में ध्यान नहीं देते और दूसरों को भी एकाग्र नहीं होने देते, ऐसा करना ठीक नहीं है। हम बालसभा में कुछ न कुछ नया सीखने के लिए ही जाते हैं। वहाँ अच्छे बनने के लिए जाते हैं। इसलिए सब कुछ ध्यान पूर्वक सीखने का आग्रह रखें।

बालसभा में जो कुछ सिखाया जाता है, उसे शान्तिपूर्वक सुनें तथा समझने का प्रयास करें। कहानी अथवा महापुरुषों के जीवन की विभिन्न घटनाओं की चर्चा वहाँ हमेशा होती रहती है। ऐसे विलक्षण प्रसंगों हमें स्मरण में रखना चाहिए। तथा अपनी नोट में अपने ही स्वच्छ अक्षरों में लिख लेना चाहिए, ताकि दूसरे सप्ताह में जब बालसभा में आगे कहीं हुई बातों का पुनरावर्तन हों तब हम अच्छे ढंग से उसे प्रस्तुत कर सकें।

बालसभा में सब से पहले नामधुन तथा प्रार्थना होती है। तत्पश्चात् भगवान और गुरु का ध्यान करना होता है। उस समय एक आसन पर बैठकर, एकाग्र मन से ध्यान में निमग्न होना चाहिए। परंतु बारबार पालथी बदलना और पैरों को इधरउधर करना ठीक नहीं है। यदि आपसे संतों अथवा संचालकों के द्वारा कुछ पूछा जाए तो ही उज़र देना चाहिए। अन्य किसी दो व्यज़्तियों के बीच में हमारा बोलना उचित नहीं है। जब हमें बोलने का आदेश दिया जाए तभी अपनी जगह पर उठकर पूरे शिष्टाचार के साथ उज़र देना चाहिए।

आप तो जानते ही है कि बालसभा में खेलकूद का समय भी निश्चित किया गया है। ऐसे समय पर यदि आप आपस में लड़ते-झगड़ते समय गवा देंगे तो आपका मन ही उदास हो जाएगा। इसीलिए खेल में हमारी हार हो या जीत परंतु अभिमान और अखड़पन को दूर करके परिणाम को सहज ही स्वीकार कर लेना चाहिए। जीत जाने पर औरों के आगे अपनी

बड़ाई हाँकना अथवा शेखी बधारना ठीक नहीं है। वैसे ही हारने पर उदास होना अथवा रोना भी अनुचित ही है। छोटे बच्चों को अपना भाई मानकर उनको हर खेल में अपने साथ शामिल करना चाहिए। 'अमुक ही खेल खेला जाय तो ही मैं खेलूँगा' ऐसा दुराग्रह तो हमें कभी भी नहीं करना चाहिए। खेल हो या सेवा जो भी कार्यक्रम होते रहें हमें प्रेम और उत्साह के साथ उसे गुरु की आज्ञा मानकर संपन्न करना चाहिए। हम ध्यान रखें कि कहीं बालसभा का पूरा समय खेलकूद में ही न बीते। ज़्योकि हम बालसभा में भारतीय संस्कृति, हमारे इष्टदेव तथा गुरु एवं अनेक प्रकार के सद्‌गुणों की दृढ़ता तथा विकास करने के लिए आते हैं। न कि केवल खेलने के लिए ही तो नहीं आते हैं! इसलिए हमें हर बालसभा के बाद कुछ विशेष ही सीखना है ऐसी भावना हमेशा बनाए रखनी चाहिए।

प्रसाद प्राप्त करते हुए हमें क्रम से आना चाहिए। जब प्रसाद में अल्पाहार की व्यवस्था हो तब पंज़्तिबद्ध बैठकर पहले धुन करना चाहिए। यदि हमें प्रसाद पसंद न हो, फिर भी उसका अनादर कभी नहीं करना चाहिए। ज़्योंकि भगवान का प्रसाद पवित्र है। उसे हम किसी भी हालत में फेंक नहीं सकते। यदि वह रुचिकर न लगे तो उसे वन्दन करके हम दूसरों को दे सकते हैं। हम जितना खा सकते हैं, उससे अधिक प्रसाद हमें कभी नहीं लेना चाहिए। कुछ बच्चे अधिक प्रसाद लेते हैं, पर खा नहीं सकते। इसलिए जूठा छोड़कर उठ जाते हैं। यह प्रसाद का अवमान है। जो बच्चे खाते खाते प्रसाद को नीचे गिराते जाते हैं, वे तो प्रसाद का तथा पैसें का नुकसान ही करते हैं। प्रसाद के बाद यदि वह कागज में दिया गया हो तो उस कागज को कचरे की टोकरी में ही डालें। यदि किसी बर्तन में दिया गया हो तो वह बर्तन धोने की जगह पर कोने में रख देना चाहिए। खाने के बाद मुँह स्वच्छ करके पानी पीना आवश्यक है, परंतु पानी के लिए भीड़ मचाना और धज़्का-धुज़्की करना उचित नहीं है। हमें पंज़्तिबद्ध खड़े होना चाहिए तथा क्रम के अनुसार पानी पीना चाहिए। ध्यान रहें कि गिलास को कभी मुँह से न लगाएँ। पानी हमेशा ऊपर से ही पीने की आदत डालनी चाहिए। जहाँ बैठकर प्रसाद लिया हो उस स्थान को हमें स्वयं ही साफ करना चाहिए। अपना काम अपने ही हाथों से हो ऐसी भावना रखने से हम

आलसी नहीं हो जाते।

सभा से बिदा होने से पूर्व प्रसाद लेने के बाद सबको प्रेमपूर्वक 'जय स्वामिनारायण' कहें, तत्पश्चात् अपने अपने घर की ओर लौटें।

22. विजापुर की वजीबाई

शरणागति भगवान की भज़्ति का एक विलक्षण प्रकार है। जिस भज़्त का हृदय भाव से परिपूर्ण होता है, जो वास्तव में निष्ठावान होता है ऐसे भज़्त हमेशा जितनी बड़ी परीक्षा में भी उज़ीर्ण हो जाता है। सच्चे भज़्त को कोई चाहे कितने भी चमत्कार ज़्यों न दिखाएँ अथवा भगवान के स्वरूप में कोई चाहे कितने भी संशय डाले परन्तु वह भगवान को, उनकी भज़्ति को तथा उनकी निष्ठा को कभी नहीं छोड़ता। भगवान स्वयं परीक्षा करें तब भी वह कभी विचलित नहीं होता। विजापुर की वजीबाई वास्तव में ऐसी ही भज़्त थीं।

गुजरात के महेसाणा जिले में एक छोटा सा गाँव है। गाँव का नाम है विजापुर। गाँव में सतवारा जाति की वजीबाई नाम की एक महिला भक्त रहती थी। साधु-सन्तों को देखते ही वह भक्तिभाव पूर्वक उनकी सेवा में लग जातीं। गाँव में जितने भी साधु-सन्त आते, उनके ही घर ठहरते । वह उनको भंग, गांजा, चिलम आदि जो कुछ चाहिए ला देतीं। वह मानती थीं कि हर भगवाधारी में भगवान का निवास है। इस लिए उनके प्रति दुर्भाव नहीं रखना चाहिए।

उसके इस भज़्तिभाव और पवित्र मन से की गई सेवा फल एक दिन उदय हो गया। भगवान स्वामिनारायण के शिष्य परमहंस स्वामी रामदासजी विजापुर पधारे। वजीबाई ने उनको अपने घर निमंत्रण दिया ठहराया। स्वामीजी वहाँ बारह दिन तक रहे तथा उनके पति को बातों ही बातों में समझा दिया कि साधु तथा असाधु में कौन सा अंतर होता है। वजीबाई भी पर्दे की आड़ में बैठकर स्वामी की बातें सुनती थीं।

एक दिन रामदासजी ने भगवान स्वामिनारायण की अपार महिमा सुनाई। वजीबाई तथा उनके पति ने उसी पल निश्चय किया की आज से हम भगवान स्वामिनारायण कि उपासना करेंगे तथा गांजा, भंग, चिलम

पीनेवाले असाधुओं की सेवा कभी नहीं करेंगे। अब लोगों के कहने पर भी वह ऐसे दुर्जनों के स्पष्ट सुना देती की तुज़्हारे लिए मेरे घर में कोई स्थान नहीं। कभी-कभी तो उसको ऐसे असाधुओं का तिरस्कार भी करना पड़ता था। विस्मय की बात तो यह थी की उसने भगवान स्वामिनारायण का प्रत्यक्ष दर्शन तक नहीं किया था।

परन्तु भगवान स्वामिनारायण एक बार उस महिला की परीक्षा लेने की ठान ली। वे मुकुंद ब्रह्मचारी के साथ वजीबाई के गाँव में पधारे। गाँव के बहार वे लोगों से पूछने लगे, 'भाई साहब गाँव मे कोई साधु-संतों की धर्मशाला मिलेगी? अथवा कोई सद्गृहस्थ के घर हमारे निवास का प्रबंध हो पाऐगा?'

लोगों ने कहा, 'महाराजजी! गाँव में एक सतवारा जाति की बाई हैं जो पहले साधुओं की सेवा किया करती थीं परन्तु जब से स्वामिनारायण की आश्रित बन गई हैं, तब से बिगड़ गई है! अब वह किसी साधु-सन्त को वह अपने यहाँ नहीं ठहरातीं।'

महाराज मन ही मन मुस्कारेन लगे और कहा, ' हम उसी के घर ठहरेंगे।'

महाराज वजीबाई के घर पहुँचे और कहने लगे, 'बाई, हम तीर्थवासी हैं। तुज़्हारे घर एक रातभर इस ओटे पर पड़े रहेंगे। कुछ माँगेंगे नहीं। परन्तु यहा ठहरने की व्यवस्था कर दीजिए।'

वजीबाई ने फौरन उज़र दिया कि 'की देखो, अब तक मैंने तुज़्हारे जैसे बहुत ढोंगी और धुतारे की सेवा की थीं, पर वे केवल माल-मिठाई खाने के लिए ही लोगों को ठगते रहते हैं। अब मैं तुज़्हारे जैसे ठगों को पहचान चुकी हूँ, इसलिए तुज़्हारी कोई बात नहीं सुनूँगी। अरे! निठल्ले, खाने को नहीं मिला तो साधु बनकर लोगों से माँग-माँगकर बड़ा पेट बनाकर घूमते हो, पर तूने आत्मा का कुछ कल्याण किया? चल, चला जा यहाँ से! मेरे घर तेरे लिए कोई जगह नहीं है। यदि अपना कल्याण चाहते हो तो स्वामिनारायण की शरण पकड़ लो।'

श्रीहरि वजीबाई की बातें सुनकर मुस्कुराने लगे और कहा, 'अरे, बाई तुम यह ज़्या कहती हो? तुझे किसने बहकाया है! स्वामिनारायण कोई

भगवान थोड़े ही है? अरे, वह वह तो पाखंडी है, पाखंडी। यदि तुम कहो, तो मैं काशी तक के पण्डितों को बुलाकर साबित कर दूँ कि स्वामिनारायण भगवान नहीं है, पर तुम रही अनपढ़ और भोली, तुम भला उसकी ज़्या जानो? अवश्य ही किसीने तुमको बहकाया है!'

यह सुनकर वजीबाई गुस्से से भड़क उठी और बोलीं, 'ए बावाजी, जरा जबान संभालकर बोल, ढोंगी तो तू हैं और पाखंडी तो तेरे गुरु होंगे। अब स्वामिनारायण का नाम लिए बिना यहाँ चलता बन। हम 'स्वामिनारायण' के सिवा और किसी का भजन नहीं करते। तू यदि उनके विषय में बुरा बोलेगा, तो तेरा पूरा सामान उठाकर फेंक दूँगी।' इतने में उनके पतिदेव ने आकर महाराज को डाँटा।

यह सुनकर श्रीहरि नम्र भाव से कहने लगे, 'भइया, अब हमें क्षमा करें। हम बिना बोले रातभर इस आँगन में पड़े रहेंगे, हमें तुज्हारे घर से कुछ भी नहीं चाहिए, पर आप हमें निकालिए मत। आप लोग हमें पीटेंगे, तो भी हम जानेवाले नहीं हैं।' इतना कहकर उन्होंने तो वहीं पर अपना आसन जमा लिया। वजीबाई ने श्रीहरि को कड़ी सूचना दी, 'देख बाबाजी मैं तुमे खाना,

पीना, बिछौना-कुछ भी नहीं दूँगी, और यदि यहाँ तुम बीड़ी-चिलम, गांजा पीते दिखाई दिए तो रात-मघारत को सामन फेंककर खदेड़ दूँगी।'

श्रीहरि सज़्मत हुए। और घर के औटे पर ही पैर फैला दिए। मगर नींद नहीं आई । कुछ देर के बाद महाराज ने वजीबाई से कहा, 'मैया! खटिया दोगीं?'

वजीबा ने सज़्ती से कहा, 'नहीं है।'

श्रीहरि ने कहा, 'तुज़्हारे घर में सामनेवाले कमरे में जो रंगीन पलंग है वही दे दो न!' वजीबा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह साधु बाहर बैठा हुआ पलंग की बात कैसे जान गया? परन्तु उन्होंने सोचा कि कुछ साधुओं में ऐसी शज़्ति होती है। खैर, उन्होंने पलंग निकाल कर दे दिया।

कुछ देर के बाद महाराज ने कहा, 'एक गद्दा और रजाई मिलेगी?'

वजीबा ने कहा, 'गद्दी या रजाई कुछ भी नहीं हैं।'

महाराज ने कहा, 'भीतर बिछौने की थप्पी में से बीचवाली अच्छी नई गद्दी दे दो।' वजीबाई को और भी आश्चर्य हुआ। उन्होंने गद्दी निकालकर दे दी।

जब पूरा गाँव सो गया तब बाई के मन में संशय जाग उठा। उन्होंने दरवाजे की दरार से झांक कर देखा की कहीं बाबा चिलम तो नहीं पी रहा? उसी पल महाराज ने अपने पैर फैलाए। वह उतनी दूर तक फैले कि करीब चालिस फूट दूर एक पीपल के पेड़ को छू गए।

वजीबाई की आँखें आश्चर्य से फैल गईं। उन्होंने देखा की महाराज के दाहिने पैर के अँगूठे से से तेज़ की धारा निकलने लगी थी। यह देखने के बाद वह सोचने लगी कि 'ऐसा चमत्कार करनेवाले कई साधु मारे मारे फिरते हैं। मुझे तो स्वामिनारायण की शरण के सिवा अन्यत्र कहीं सिर नहीं झूकाना है।' वजीबाई घर में जाकर सो गई। प्रता:काल जब वे उठी तब श्रीहरि वहाँ से चल दिए थे।

कुछ महीनों के बाद वजीबाई संघ के साथ महाराज का दर्शन के लिए गढ़डा गई। महाराज उनको देखते ही पहचान गए। उनका आदर किया, और कहा, 'बाई, देखो हमारे चरण। तुज़्हारे पीपल को छूनेवाले यही पैर थे या दूसरे?'

वजीबाई यह सुनकर स्तज़्ध रह गई। ज़्या भगवान स्वंय मेरी परीक्षा करने के लिए मेरे घर आये थे। और मैं ने अनजान में उनको कितनी गालियाँ दीं। उन्होंने बार-बार क्षमायाचना की और कहा, 'मैं आपको पहचान नहीं पाई। इसीलिए आपका अनादर हो गया, महाराज, मुझे क्षमा कीजिए।'

परन्तु श्रीहरि प्रसन्न होकर कहने लगे, 'मैया, तुम तो अविचल मनोबल रखने वाली निष्ठा से परिपूर्ण भज़्त हों। हम तो तुज़्हारी परीक्षा लेने के लिए आए थे।'

महाराज ने सबको वजीबाई की कहानी सुनाई। उनकी प्रशंसा की और ऐसे आदर्श भज़्त बनने के लिए सभी को प्रेरित किया।

23. कीर्तन

भाव हृदय में भरकर बोलो, अक्षर-पुरुषोज़म
जय जय अक्षर-पुरुषोज़म.... भाव ॰

सकलशास्त्र का परमसार यह, ब्रह्म और परब्रह्म,
जय जय ब्रह्म और परब्रह्म.... भाव ॰

मूलाक्षर यह ब्रह्म अनादि, 'गुणातीतानन्द',
जय जय गुणातीतानन्द.... भाव ॰

पुरुषोज़म परब्रह्म परात्पर, श्रीहरि सहजानन्द
जय जय श्रीहरि सहजानन्द.... भाव ॰

नरतनु लेकर प्रकट हुए ये भज़्त और भगवन
जय जय भज़्त और भगवन.... भाव ॰

श्रद्धा से यह नाम रटे तो, शान्तिपूत हो मन
जय जय शान्तिपूत हो मन.... भाव ॰

सदा स्नेहमय होकर बोलो, अक्षर-पुरुषोज़म
जय जय अक्षर-पुरुषोज़म.... भाव ॰